Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24 website- www.dvpnews.in रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 66 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शुक्रवार 23 अगस्त 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

हमें उस विकास से कुछ मतलब नहीं जो हमारी आस्था को कलंकित कर दें।

We have no cocern with that development which disgraces our faith.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

नगरीय प्रशासन विभाग में 166 अधिकारियों व कर्मचारियों के तबादले

रायपुर (आरएनएस)। राज्य शासन के नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग ने 166 अधिकारियों और कर्मचारियों की नवीन पदस्थापना के आदेश जारी किए हैं। विभाग द्वारा मंत्रालय से इस संबंध में चार अलग-अलग आदेश जारी किए गए हैं। स्थानांतरित अधिकारियों में मुख्य नगर पालिका अधिकारी से लेकर मुख्य अभियंता, अधीक्षण अभियंता, कार्यपालन अभियंता, सहायक अभियंता, उप अभियंता, मुख्य स्वच्छता निरीक्षक, वरिष्ठ स्वच्छता निरीक्षक, स्वच्छता निरीक्षक, राजस्व निरीक्षक, राजस्व उप निरीक्षक, सहायक राजस्व निरीक्षक, लेखापाल, सहायक ग्रेड-2, कैशियर, सफाई दरोगा, वाहन चालक, पंप अटेंडेंट और सफाई कामगार शामिल हैं।

अलकायदा के सात आतंकी गिरफ्तार, हथियार बरामद

रांची (आरएनएस)। झारखंड पुलिस के एटीएस (एंटी टेररिस्ट स्क्वॉड) ने हजारीबाग, लोहरदगा सहित कई अन्य जिलों में एक दर्जन से ज्यादा ठिकानों पर छापेमारी की। इस दौरान एटीएस आतंकी संगठन अलकायदा इंडियन सब कॉन्टिनेन्ट से जुड़े सात लोगों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से एक एके-47 सहित कुछ अन्य हथियारों की बरामदगी की भी सूचना है। झारखंड एटीएस ने आधिकारिक तौर पर इन गिरफ्तारियों के बारे में खुलासा नहीं किया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पोलैण्ड में भारतीय समुदाय को किया संबोधित

दिल्ली (पीआईबी)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज वारसॉ में भारतीय समुदाय द्वारा उनके सम्मान में आयोजित एक कार्यक्रम में प्रवासी भारतीयों को संबोधित किया।

प्रधानमंत्री का भारतीय समुदाय द्वारा विशेष उत्सा ह और गर्मजोशी के साथ स्वागत किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय प्रधानमंत्री की पोलैंड यात्रा 45 वर्षों के बाद हो रही है और वह भारत-पोलैंड संबंधों को मजबूत करने के लिए राष्ट्रपति आंद्रेज डूडा और प्रधानमंत्री डोनाल्ड टस्क से मिलने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र की जननी के रूप में भारत और उसके साझा मूल्यों के साथ पोलैंड दोनों देशों को करीब लाते हैं।

प्रधानमंत्री ने दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने में भारतीय प्रवासी समुदाय द्वारा किए गए महत्वपूर्ण योगदान पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने ऑपरेशन गंगा की सफलता में उनकी भूमिका की भी सराहना की। उन्होंने इस समुदाय से भारत में पर्यटन का ब्रांड एंबेसडर बनने और इसकी विकास गाथा का हिस्सा बनने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि कोल्हानपुर के डोबरी महाराजा और मोंटे कैसिनो की लड़ाई के स्मारक दोनों देशों के लोगों के बीच जीवंत संबंधों के शानदार उदाहरण हैं। इस विशेष बंधन को और मजबूत करने प्रधानमंत्री ने जामसाहब मेमोरियल यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम नामक एक नई पहल की घोषणा की। इसके तहत हर साल 20 पोलैंड के युवाओं को भारत आमंत्रित किया जाएगा। उन्होंने गुजरात में भूकंप के दौरान पोलैंड द्वारा प्रदान की गई सहायता को भी याद किया। प्रधानमंत्री ने पिछले 10 वर्षों के दौरान भारत द्वारा की गई परिवर्तनकारी प्रगति के बारे में बात की। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भारत अगले कुछ वर्षों में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। उन्होंने 2047 तक देश को एक विकसित राष्ट्र- विकसित भारत- बनाने के अपने दृष्टिकोण के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि पोलैंड और भारत नई प्रौद्यागिकी और स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में अपनी साझेदारी बढ़ा रहे हैं और हरित विकास को बढ़ावा दे रहे हैं।

रायपुर ईडी कार्यालय के सामने कांग्रेस ने किया प्रदर्शन, पूर्व सीएम भूपेश बघेल और पीसीसी चीफ बैरिकेड पर चढ़े

रायपुर (विश्व परिवार)। हिंडनबर्ग ने अपनी नई रिपोर्ट में अडानी मामले में सेबी की प्रमुख माधबी बुच को भी आरोपी बताया है। मोदी सरकार पर अडानी को लेकर कई तरह के आरोप एक बार फिर तूल पकड़ने लगे लेकिन सरकार की तरफ से अब तक इस पर कोई प्रतिक्रिया या कार्रवाई सामने नहीं आई है। जिसके बाद अब कांग्रेस ने सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। छत्तीसगढ़ कांग्रेस पार्टी ने गुरुवार को कांग्रेस ने ईडी दफ्तर के बाहर प्रदर्शन किया। बता दे की बाद कांग्रेसी पूर्व सीएम भूपेश बघेल और पीसीसी चीफ के नेतृत्व में श्वष्ठ दफ्तर का घेराव किया। इसके साथ ही देश के कोने-कोने में कांग्रेस नेताओं ने श्वष्ठ दफ्तर का घेराव किया। पुलिस ने बैरिकेड लगा रखा था। बेरिकेट के पास पहुंचते ही पुलिस ने कांग्रेसियों को रोका ता पुलिस और कांग्रेस नेताओं के बीच जमकर झूमाझटकी हुई। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और पीसीसी चीफ दीपक बैज भी बैरिकेड तोड़ने में कार्यकर्ताओं की मदद करते दिखे। कार्यकर्ताओं ने पूर्व सीएम श्री बघेल को कंधे पर उठाकर बेरिकेट पार कराने का प्रयास किया।

इस दौरान पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने कहा, हम राष्ट्रीय स्तर पर ईडी कार्यालय का घेराव कर रहे हैं, क्योंकि ईडी भारतीय जनता पार्टी के हितों को ध्यान में रखते हुए कार्रवाई करते रही है. अब एनडीए की सरकार है। मोदी की सरकार नहीं है. मोदी चार माह में चार बार यू टर्न ले चुके हैं. अब अधिकारियों को समझ जाना चाहिए कि अब आपको मोदी जी बचाएंगे नहीं ,कांग्रेस सरकार आई तो एजेंसियों द्वारा मारे गए छापों की जांच करवाएंगे. ईडी, आईटी, डीआरआई, सीबीआई के अधिकारी सुन लें, जिस दिन हमारी सरकार आएगी, सुप्रीम कोर्ट के जज के नेतृत्व में समिति बनाकर सब छापों के मामलों की जांच की जाएगी ?. अधिकारी अपना रवैया सुधार लें। दरअसल, व्हिसलब्लोअर दस्तावेजों के आधार पर हिंडनबर्ग ने दावा किया था कि, बुच और उनके पति की मॉरीशस की ऑफशोर कंपनी 'ग्लोबल डायनामिक अपॉर्च्युनिटी फंड' में हिस्सेदारी है। गौरतलब है कि, हिंडनबर्ग रिसर्च पिछले साल अडाणी ग्रुप पर वित्तीय अनियमितता के आरोप लगाकर चर्चा में आई थी।

राहुल गांधी का जम्मू-कश्मीर दौरा, बोले - यहां के लोगों के दिल का दर्द मिटाना ही मेरा लक्ष्य

श्रीनगर (आरएनएस)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी जम्मू-कश्मीर के दौरे पर हैं। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि जैसे ही हमें पता चला कि चुनाव होने वाले हैं तो मल्लिकार्जुन खरगे और हम मिले और हमने तय किया कि हमें सबसे पहले जम्मू-कश्मीर आना चाहिए। हम जम्मू और कश्मीर के लोगों और हिंदुस्तान के हर राज्य के लोगों को ये संदेश देना चाहते हैं कि हमारे लिए जम्मू और कश्मीर के लोगों का प्रतिनिधित्व व राज्य का दर्जा सबसे जरूरी चीज है। हिंदुस्तान के इतिहास में आजादी के बाद कई बार केंद्रीय शासित प्रदेश को राज्य में बदला गया है लेकिन एक ही उदाहरण है जब राज्य का दर्जा छीनकर केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया है... हम यह संदेश देना चाहते हैं कि जम्मू और कश्मीर के लोगों का प्रतिनिधित्व हमारे लिए और देश के लोगों के लिए जरूरी है इसलिए हम यहां पहले आए हैं।

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा मैं लोकतंत्र की रक्षा पूरे देश में करता हूं लेकिन मेरे लिए जम्मू और कश्मीर के लोगों के दिल के दर्द को मिटाना ही लक्ष्य है... जो आपको सहना पड़ता है, जिस डर में आप जीते हो, जो दुख आपको होता है उसे मैं, मल्लिकार्जुन खरगे, पूरी कांग्रेस पार्टी हमेशा के लिए मिटाना चाहते हैं।

कांग्रेस और नेशनल कांफ्रेंस ने मिलाया हाथ

जम्मू (आरएनएस)। जम्मू-कश्मीर से बड़ी खबर सामने आई है। यहां विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस में गठबंधन का ऐलान हो गया है। नेशनल कॉन्फ्रेंस के चीफ फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि हम सभी 90 सीटों पर चुनाव लड़ेंगे। अब्दुल्ला ने कहा कि इस गठबंधन में किसी के लिए दरवाजे बंद नहीं हैं।

कोलकाता रेपकांड : 30 साल में ऐसी लापरवाही नहीं देखी, सीबीआई का दावा- सबूतों से हुई छेड़छाड़

नई दिल्ली (आरएनएस)। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में ट्रेनी डॉक्टर के रेप-मर्डर केस में वीरवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान ष्क्क्ष ने कोर्ट में कहा- क्राइम सीन से छेड़छाड़ हुई है। जस्टिस जेबी पारदीवाला ने कहा- कोलकाता पुलिस की भूमिका पर संदेह है। जांच में ऐसी लापरवाही अपने 30 साल के करियर में नहीं देखी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सुबह 10.10 बजे अननेचुरल डेथ की डायरी एंट्री हुई। ये परेशान करने वाली है। सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि घटनास्थल पर कई अहम सुराग थे, लेकिन उसे संरक्षित करने में देर की गई. इसकी वजह से अहम सबूत मिट जाने का अंदेशा है। सुप्रीम कोर्ट ने पूछा कि पंचनामा कब किया गया. इस पर सिब्बल ने कहा कि शाम 4.20 के बाद हुआ। सीजेआई ने कहा कि इस मामले में कोलकाता पुलिस के काम का तरीका सही नहीं. पुलिस ने कानून के तहत काम नहीं किया, उसकी हरकत संदेह के घेरे में है। जस्टिस पादरीवाला ने कहा कि 30 साल में ऐसा केस नहीं देखा. ये केस चौंकाने वाला है।

कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में महिला डॉक्टर की दुष्कर्म के बाद हुई हत्या के मामले में स्टेटस रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट में पेश कर दी। रिपोर्ट में सीबीआई ने बताया है कि कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज मामले में अपराध स्थल से छेड़छाड़ की गई। इस पूरे मामले में लीपापोती की कोशिश की गई। सीबीआई ने अंतिम संस्कार के बाद एफआईआर दर्ज किए जाने पर भी सवाल उठाए।

केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह करेंगे नक्सल मामलों की समीक्षा

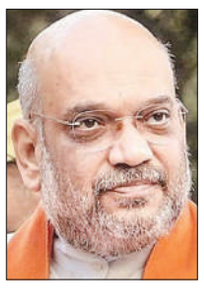

रायपुर (आरएनएस)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का मिनट-टू-मिनट कार्यक्रम तय हो गया है। शाह तीन दिन छत्तीसगढ़ में रहेंगे। इस दौरान वे अधिकारियों की बैठक लेने से पहले चंपारण जाएंगे, जहां वे वल्लभाचार्य के दर्शन करने के बाद स्थानीय कार्यक्रम में शामिल होंगे। दूसरे दिन सुबह शाह छत्तीसगढ़ से जुड़े सभी सात राज्यों के मुख्य सचिवों और डीजीपी के साथ इंटर-स्टेट कॉर्डिनेशन कमेटी की बैठक लेकर नक्सल मामलों की समीक्षा करेंगे। शाह 23 से 25 अगस्त तक छत्तीसगढ़ में रहेंगे। शाह के तय कार्यक्रम के मुताबिक वे शनिवार को दोपहर 12 से डेढ़ बजे तक इंटर स्टेट को-ऑर्डिनेशन कमेटी की बैठक लेंगे। इसमें छत्तीसगढ़ समेत संबंधित राज्यों के मुख्य सचिव और डीजीपी भी शामिल होंगे। वे रात 8 से 9.30 बजे तक डीजीपी से वन-टू-वन बात करेंगे। दोनों ही मीटिंग का मुख्य एजेंडा नक्सल मुद्दा रहेगा। बताया गया है कि शाह 23 अगस्त को दिल्ली से बीएसएफके विमान से रवाना होकर रात करीब सवा दस बजे रायपुर पहुंचेंगे। वे 24 अगस्त को सुबह 10 बजे होटल से एयरपोर्ट रवाना होंगे। यहां से वे हेलीकॉप्टर से नवागांव जाएंगे। वहां वल्लभाचार्य आश्रम में कार्यक्रम में शामिल होंगे। वे पौने बारह बजे तक रायपुर लौट आएंगे। शाह शनिवार को 2 से 3 बजे तक छत्तीसगढ़ पुलिस के कामकाज की समीक्षा करेंगे। वे 3 से 4.30 बजे तक बैठक लेंगे। इसके बाद शाह साढ़े चार बजे से 6 बजे तक विकास कार्यों की रिपोर्ट लेंगे। 6 से 8 बजे तक रात्रि भोजन व अन्य कार्यों के लिए समय आरक्षित रखा गया है। एनसीआरबी कार्यालय का उद्घाटन करेंगे शाह 25 अगस्त को सुबह 11 से 12.30 बजे तक राष्ट्रीय क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो ङ्क एनसीआरबी ब्रांच ऑफिस का शुभारंभ करेंगे। इसके बाद वे बैठक लेकर नॉरकोटिक्स की रिपोर्ट लेंगे। दोपहर 1 से 2 बजे तक लंच के बाद वे 2 से 3.30 बजे तक राज्य सरकार के कामकाज की समीक्षा करेंगे। वे शाम पौने चार बजे स्वामी विवेकानंद विमानतल से दिल्ली के लिए रवाना होंगे।

त्रिपुरा डैम के कारण बांग्लादेश में बाढ़ आने के दावों को भारत ने किया खारिज

नई दिल्ली (आरएनएस)। बांग्लादेश के सीमावर्ती जिलों में हाल में आई बाढ़ को लेकर बांग्लादेश ने भारत पर आरोप लगाया था कि त्रिपुरा के डंबूर बांध के खुलने के कारण वहां बाढ़ आई है। इस पर भारत ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है और बांग्लादेश के आरोपों को गलत बताया है। भारत ने गुरुवार को साफ किया कि बाढ़ की यह स्थिति त्रिपुरा बांध से पानी छोड़े जाने के कारण नहीं आई है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने एक बयान जारी कर कहा, हमने बांग्लादेश में व्यक्त की जा रही चिंताओं को देखा है कि बांग्लादेश की पूर्वी सीमाओं पर कई जिलों में बाढ़ की स्थिति त्रिपुरा में गुमटी नदी के ऊपर डंबुर बांध के खुलने के कारण हुई है। यह तथ्यात्मक रूप से सही नहीं है।

काम पर लौटें डॉक्टर, हमने एक्सपर्ट कमेटी गठित की है', कोलकाता केस पर सुनवाई दौरान सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी

नई दिल्ली (आरएनएस)। सुप्रीम कोर्ट ने हड़ताल पर गए डॉक्टरों से काम पर लौटने का आग्रह किया है। कोर्ट ने कहा डॉक्टरों के खिलाफ किसी भी तरह की कार्रवाई नहीं होगी। कोर्ट ने कहा हमें एक्सपर्ट कमेटी बनाई है। सीजेआई ने कहा कि अगर डॉक्टर ड्यूटी पर हैं तो उन्हें अनुपस्थित नहीं माना जाएगा लेकिन अगर वो ड्यूटी पर नहीं हैं तो कानून का पालन किया जाएगा। कोर्ट ने कहा कि डॉक्टर के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करेगा। उसके बाद कोई परेशानी होती है तो कोर्ट आ सकता है। कोर्ट ने कहा कि डॉक्टर अपने काम पर वापस लौटे। अगर काम पर वापस नहीं लौटते है तो सार्वजनिक प्रशासनिक ढांचा कैसे चलेगा। ANF में डॉक्टर शामिल होंगे क्योंकि रेसिडेंट डॉक्टर को आश्वस्त करें कि उनकी बात नेशनल टास्क फोर्स द्वारा सुनी जाएगी। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को कोलकाता के आर जी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में एक महिला डॉक्टर के कथित बलात्कार और हत्या से संबंधित मामलों की सुनवाई फिर से शुरू की।

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल का राजधानी के अस्पतालों में औचक निरीक्षण

अस्पतालों की सुविधाओं का लिया जायजा, मरीजों से की बात

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल ने आज सुबह राजधानी रायपुर के कई अस्पतालों में औचक निरीक्षण किया। श्री जायसवाल ने सबसे पहले मेडिकल कालेज हॉस्पिटल का निरीक्षण किया। श्री जायसवाल ने यहां मरीजों से बात की उन्हें मिल रही सुविधाओं का भी जायजा लिया।

स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल ने इसके बाद रायपुर पंडरी जिला हॉस्पिटल का निरीक्षण कर यहां भर्ती मरीजों से उनका हाल चाल जाना और उन्हें मिल रही स्वास्थ्य सुविधाओ की जानकारी लेकर अन्य आवश्यक सुधारो के लिए सी एम एच ओ को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। जायसवाल ने इस दौरान मातृ एवं शिशु हॉस्पिटल पुलिस लाइन टिकरापारा का भी निरीक्षण किया और स्वास्थ्य सुविधाओ की जानकारी लेकर व्यवस्था में सुधार के लिए आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए।

प्रदेश में मानसून एक बार फिर हुआ सक्रिय

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ में एक बार फिर मौसम का मिजाज बदल गया है। आज सुबह से ही राजधानी रायपुर के कई हिस्सों में बारिश हुई है। जिससे एक बार फिर लोगों को गर्मी से राहत मिली है। आपको बता दें कि कल सुबह से ही राजधानी रायपुर समेत प्रदेश के कई जिलों में धूप निकली थी। जिससे लोग उमस से परेशान हो गए थे। लेकिन शाम में कई हिस्सों में हल्की बारिश हुई। मौसम विभाग ने कई जिलों के लिए अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के अनुसार छत्तीसगढ़ के 16 जिलों में आज हैवी रेन का यलो अलर्ट है।

संक्षिप्त समाचार

राज्यपाल रमेन डेका से विधानसभा नेता प्रतिपक्ष चरण दास महंत ने सौजन्य भेंट की

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल श्री रमेन डेका से आज यहां राजभवन में छत्तीसगढ़ विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरण दास महंत ने सौजन्य भेंट की। इस अवसर पर सांसद श्रीमती ज्योत्सना महंत भी उपस्थित थी।

मुख्यमंत्री ने दिल के आपरेशन लिए स्वेच्छानुदान से दिया 5 लाख रूपये, कलेक्टर ने की भेंट

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अपने स्वेच्छानुदानमद से भाटापारा निवासी देवा केसरवानी पिता शंकर केसरवानी के लिए 5 लाख रूपये स्वेच्छानुदान से दिया है। उक्त राशि देवा केसरवानी के गंभीर दिल के आपरेशन (हृदय संबधित) उपचार हेतु प्रदान किया गया है। आज कलेक्टर दीपक सोनी ने देवा केसरवानी को स्वेच्छानुदान की 5 लाख रूपये का चेक भेंट की.इस दौरान भाटापारा एसडीएम नितिन तिवारी, जिला नाजिर शिव सोनी भी उपस्थित रहे। स्वेच्छानुदान से राशि मिलने पर देवा केसरवानी ने मुख्यमंत्री के प्रति आभार आभार जताया है.

श्रमिक पंजीयन कार्ड नवीनीकरण 31 दिसम्बर तक

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मंडल के गठन से अब तक ऐसे पंजीकृज श्रमिक जिनके पंजीयन की वैद्यता समाप्त हुए 1 वर्ष या उससे अधिक समय हो चुका है, तथा जो श्रमिक पंजीयन नवीनीकरण हेतु अब तक आवेदन प्रस्तुत नही किया गया हैं, ऐसे श्रमिकों से 31 दिसम्बर 2024 तक नवीनीकरण आवेदन कर सकते है। इसके पश्चात ऐसे अनवीनीकृत पंजीयन को अपंजीकृत माना जायेगा। समस्त ऐसे पंजीकृत श्रमिकों जिसका श्रमिक पंजीयन कार्ड की वैद्यता समाप्त हो गई हो, वह श्रमिक श्रम विभाग के (श्रमेव जयते) मोबाईल एप्प या श्रम विभाग के वेबसाईट या अन्य ऑनलाईन के माध्यम से नवीनीकरण हेतु आवेदन कर सकते हैं। इस संबंध में अधिक जानकारी हेतु मुख्यमंत्री श्रमिक सहायता केन्द्र के दूरभाष नम्बर 0771-3505050 पर संपर्क कर सकते है।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोबरा नवापारा में पदस्थ स्टाफ नर्स को अन्यत्र स्थानांतरित किया गया

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोबरा नवापारा में पदस्थ स्टाफ नर्स प्रियंका साहू को अन्यत्र स्थानांतरित कर दिया गया है। कार्यालय जिला मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी रायपुर द्वारा 12 अगस्त को जारी आदेश में श्रीमती प्रियंका साहू की ड्यूटी वैकल्पिक व्यवस्था के तहत अस्थाई रूप से आगामी आदेश पर्यंत तक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र फरफौद विकासखंड आरंग जिला रायपुर में लगाई गई है। इस आशय का आदेश भले ही 12 अगस्त को जारी किया गया है लेकिन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोबरा नवापारा को संभवत: इस आदेश की प्राप्ति 20 अगस्त को हुई है। बताना जरूरी है कि 2 अगस्त को स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोबरा नवापारा का आकस्मिक निरीक्षण किया था। इस दौरान लोगों ने उनसे स्टाफ नर्स श्रीमती प्रियंका साहू के दुर्व्यवहार की जमकर शिकायत की थी, जिसके बाद स्वास्थ्य मंत्री जायसवाल ने मौके पर मौजूद मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को प्रियंका साहू को अन्यत्र स्थानांतरित करने के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र गोवरा नवापारा, वि.खं. अभनपुर, जिला-प्रयपुर (छ.ग.) को निर्देश दिए थे। लेकिन मंत्री के निर्देश के बावजूद श्रीमती प्रियंका साहू को अन्यत्र स्थानांतरित नहीं किया गया था।

स्कूल जा रहे दो बच्चों को मुरूम से भरे हाईवा ने मारी टक्कर, घटना में एक बच्चे की मौत दूसरा गंभीर रूप से घायल

घायल बच्चे की स्थिति गंभीर, घटना के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने हाइवा में लगा दी आग

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। नवापारा क्षेत्र में एक दर्दनाक सड़क दुर्घटना मे स्कूल जा रहे दो बच्चों को मुरूम से भरे हाईवा ने टक्कर मार दी। इस घटना में एक बच्चे की मौके पर ही मौत हो गई है वहीं दूसरा बच्चा गंभीर रूप से घायल है। घायल बच्चे को तत्काल अभनपुर अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी स्थिति गंभीर बताई जा रही है। घटना के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने हाइवा में आग लगा दी।

मिली जानकारी के अनुसार रुपेश साहू पिता कृष्णा साहू और धीरज सेन पिता दीपक सेन ग्राम उगेतरा से दोनों युवक मोटर साइकिल से तोरला हाई स्कूल जा रहे थे। वे नवागाँव खार के पास पहुंचे ही थे कि अचानक मुरूम से लदी हाईवा तेजी से आया और बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर से दोनों युवक अनियंत्रित होकर गिर गए जिसमें रूपेश साहू की गंभीर चोट लगने से मौके पर ही मौत हो गई और धीरज सेन गंभीर रूप से घायल हो गया है जिसे तुरंत उपचार के लिए अभनपुर भेजा गया।

मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई। इस हादसे से गुस्साए ग्रामीणों ने तुरंत प्रतिक्रिया दी और हाईवा में आग लगा दी। स्थिति को भांपते हुए क्षेत्र के सभी थानों से टीम को बुलाया गया है। इसके बाद मौके पर भारी पुलिस बल तैनात हो गई है। फायर ब्रिगेड की टीम द्वारा आग बुझाने का प्रयास जारी है। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

आरंग थाना प्रभारी राजेंश सिंह के अनुसार यह घटना सुबह 10 बजे की है। दो बच्चे बाइक में सवार होकर तोरला के हाईस्कूल जा रहे थे। इस दौरान सामने से तेज रफ्तार हाइवा ने बाइक को टक्कर मार दी। इस घटना में एक बच्चे की मौत हो गई है वहीं दूसरे की हालत गंभीर है। घटना के बाद गांव वालों ने हाईवा को जला दिया है। फिलहाल स्थिति नियंत्रण में है।

कमिश्नर कावरे की पहल : रायपुर संभाग में 42 पदों पर जल्द होगी अनुकंपा नियुक्ति

कलेक्टरों को प्रकरणों पर समय-सीमा निर्धारित कर कार्रवाई के निर्देश

संभागायुक्त ने वीडियो कार्फ्रेसिंग के माध्यम से की संभागस्तरीय कलेक्टर्स कांफ्रेंस

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर संभाग में शामिल सभी पांच जिलों में अनुकंपा नियुक्ति के लिए मिले 42 आवेदनों पर जल्द ही कार्रवाई पूरी होकर प्रभावितों को सरकारी नौकरी मिलने का रास्ता खुल गया है। संभागायुक्त श्री महादेव कावरे ने संभाग के पांचों कलेक्टरों को इन प्रकरणों पर जल्द से जल्द कार्रवाई कर योग्य उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र जारी करने के निर्देश दिए है। श्री कावरे ने यह निर्देश वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से संभाग स्तरीय कलेक्टर्स कांफ्रेस में दिए। उन्होंने धमतरी, बलौदाबाजार, महासमुंद जिले के कलेक्टरों को उनके जिलों में लंबित 18 अनुकंपा नियुक्ति आवेदनों पर तत्काल कार्रवाई करने को कहा। रायपुर जिले में लंबित 24 आवेदनों के निराकरण के लिए संभागायुक्त ने सक्षम अधिकारी की अध्यक्षता में तत्काल समिति गठित कर कार्रवाई शुरू करने के निर्देश दिए। बैठक में श्री कावरे ने सरकारी दफतरों में समय पर अधिकारी-कर्मचारियों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के सख्त निर्देश भी कलेक्टरों को दिए। श्री कावरे ने कहा कि निर्धारित समय पर कर्मचारी शासकीय कार्यालय में पहुंचे। साथ ही कार्यालय भी निर्धारित समय में खुलें। उन्होंने सभी कार्यालय में अधिकारी व कर्मचारियों के नाम की पट्टिकाएं लगाने को भी कहा। कलेक्टर कांफ्रेंस में संभाग के पांचों जिलों के कलेक्टर, जिला पंचायत के सीईओ और अन्य विभागों के अधिकारी भी मौजूद रहे।

कलेक्टर्स कांफ्रेंस में श्री कावरे ने ग्रामीण क्षेत्रों में सॉलिड और लिक्विड कचरे के निष्पादन के बारे में विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने कचरे को अलग-अलग करने के लिए ग्राम पंचायतों में बने मंणीकंचन केंद्र या शेड निर्माण की समीक्षा की तथा शेष ग्राम पंचायतों में भी जल्द से जल्द ऐसी व्यवस्था करने के निर्देश दिए। श्री कावरे ने घर-घर से कचरा इकट्ठा करने के लिए ट्राइसायकिल, ई-रिक्शा सहित स्वच्छता दीदियों के लिए दस्ताने, डब्बे आदि व्यवस्थाएं भी सुनिश्चित करने को कहा। संभागायुक्त ने राष्ट्रीय राजमार्गों के लिए भूमि अधिग्रहण के दौरान बटाकंन से होने वाली समस्याओं के निराकरण के लिए सभी जिला कलेक्टरों से सुझाव भी मांगे।

आंगनबाड़ी सहायिका के 59 पदों पर भर्ती हेतु 11 सितम्बर तक आवेदन आमंत्रित

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। महिला एवं बाल विकास विभाग के अंतर्गत सोनाखान एकीकृत बाल विकास परियोजना में आंगनबाड़ी सहायिका के 59 रिक्त पदों पर भर्ती की जाएगी। जिसमें आंगनबाड़ी सहायिका के 59 पदों के लिए ठाकुरदिया, पैरागुड़ा, भरका, टेमरी-2, खैरवारडीह, बफरा, पिपरछेड़ी-2, दौनाझर, डाढ़ाखार, झालपानी, कटवाझर, नवाडीह, घिरघोल, अल्दा, डिपरापारा(रिको), पुरानीबस्ती(अ), त्रिकुटीडीपा(अ), दानीडीपा, रूनझुनी, नवाडीह, लुकाउपाली, तेन्दुचुवा, मेड़ीडीपा, तालाझर, अकलतरा, सैयभाठा, बल्दाकछार-3, दलदली, मुरूमडीह, कौहाबाहर, ठेलकाडबरी, नदीपारा(सो), डिपरापारा(सो), बंसुलीडीह, कलमीदादर, त्रिकुटीपारा(चां), डिपरापारा(थ), तिलसाभाठा, पकलाडीपा, सड़कपारा, बोदापाली, आमापारा, शुकलाभाठा, पुरानीबस्ती, मिरगिदा, बिटकुली, चन्हाट, सलिहाभाठा, जोगीडीपा, सारसडोल, देवतराई, पचपेड़ी, पोड़ी, जुनाडीह, मंगलडीपा, मुगुलभाठा, बलारनवागांव, कोर्राडीह एवं अचानकपुर आंगनबाड़ी केन्द्र शामिल है। आंगनबाड़ी सहायिका पद के लिए आठवीं उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। यह पद केवल महिलाओं के लिए है। आवेदन करने के अंतिम तिथि 11 सितम्बर 2024 तक कार्यालयीन समय में सायं 5.30 बजे तक कार्यालय एकीकृत बाल विकास परियोजना सोनाखान, जिला बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.) के पते पर अपना आवेदन पत्र केवल पंजीकृत डाक के माध्यम से जमा कर सकते है।

काम तो हम रोज करते हैं, कैसे करते हैं? यह ज्यादा मायने रखता है : विराग मुनि जी

एमजी रोड स्थित श्री जैन दादाबाड़ी में चातुर्मासिक प्रवचन

रायपुर (विश्व परिवार)। संसार में रहते हुए क्रियाएं करना जरूरी है। इस दौरान हमसे किसी तरह का पाप न हो, इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। एमजी रोड स्थित श्री जैन दादाबाड़ी में श्री विनय कुशल मुनिजी महाराज साहब के सानिध्य में चल रहे चातुर्मासिक प्रवचन में विराग मुनि महाराज साहब ने ये बातें कही।

उन्होंने कहा कि आहार जीवन का आधार है। हम रोज आहार कर रहे हैं। आहार में क्या लेना है और कितना लेना है, इसका विचार नहीं कर रहे हैं। विषयों का विराग जरूरी है। इसे हर किसी को समझना होगा। अपरिग्रह के साथ जीवन जिएं। अर्थात जितना जरूरी है, उतना ही लें। ये प्रयास करें कि आपके जीवन में कम से कम कर्मों का बंध हो। कम से कम पाप हों। हम अच्छा से अच्छा जीवन कैसे जी सकते हैं, हमें इसकी चिंता करनी है। सुलीभद्र जी से सीखिए जिन्होंने इतना अच्छा जीवन जिया। हम ऐसा जीवन नहीं जी पा रहे हैं तो इसके पीछे मुख्य कारण यही है कि हमारे भीतर धर्म के लिए अहोभाव नहीं हैं। आज स्थिति में है कि लोगों को भक्ष-अभक्ष का भी ज्ञान नहीं रह गया है। होटलों में पारणा किया जा रहा है। विवेक रखें। जैन धर्म में जन्म लिया है। जिन शासन के नियमों का पालन करें।

जो प्राप्त है, वहीं पर्याप्त है

मन में संतोष लाना ही होगा

मुनिश्री ने कहा, लोग धन प्राप्ति के लिए पूरा पुरुषार्थ कर रहे हैं। पानी की गिरती बूंद की तरह जीवन बिताता जा रहा है। दूसरों की संपत्ति को देख हम दुखी एवं ईर्ष्या में लगे हैं। जो प्राप्त है, वही पर्याप्त है। मन में संतोष लाना होगा। यह चातुर्मास गुरु बिना समय वापस नहीं मिलेगा। संसार को कब तक पकड़े रहेंगे? मरते दम तक? संसार की चिंता में डूबे हैं। ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य की चिंता कर आत्म कल्याण करना होगा। वही साथ जाएगा।

निंदा करते घंटों बीत जाएं, पता नहीं चलता पर प्रवचन में मन नहीं लगता

उन्होंने कहा कि निंदा में रस आता है। घंटों बीत जाए, पता नहीं चलता। वहीं लोगों को प्रवचन-स्वाध्याय में कोई रस नहीं मिलता। महावीर ने बताया है कि इस जगत में कोई भी सुख नहीं दे सकता। हम मोह-माया, राग-द्वेष में एवं इंद्रियों के वश में विचारों से और न जाने कितना गिरेंगे। समाचार पत्रों में रोज ऐसी घटनाएं आ रही हैं, जिन्हें पढ़ने के बाद मन दहल जाता है?।

26 अगस्त को तपस्वियों की होगी अनुमोदना

आत्मस्पर्शीय चातुर्मास समिति के अध्यक्ष पारस पारख और महासचिव नरेश बुरड़ ने बताया कि महान सिद्धि तप के अंतर्गत गुरुवार को तेला रहा। समस्त तपस्वियों के अनुमोदनार्थ 26 अगस्त को सुबह 9 बजे से प्रार्थना होगी। यहां बॉम्बे से आए सुप्रसिद्ध संगीतकार नरेंद्र वाणीगोता %निराला% द्वारा बोली बोली जाएगी, जिसका आप लाभ उठा सकते हैं। मुकेश निमाणी और गौरव गोलछा ने बताया कि दादा गुरुदेव इकतीसा जाप के अंतर्गत हर रात 8.30 से 9.30 बजे तक श्री जैन दादाबाड़ी में प्रभु भक्ति का क्रम जारी है। **-गौरव शर्मा**

कार्य की सफलता पुरुषार्थ एवं भाग्य के एक साथ होने पर निर्भर करती है : मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज

जयपुर में पहली बार मुनिश्री प्रणम्य सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में मीरा मार्ग के आदिनाथ भवन पर चल रहा पार्श्व पुराण का वाचन-पार्श्वनाथ कथा में उमड़े श्रद्धालु

मीरा मार्ग के आदिनाथ भवन पर शुक्रवार को प्रातः 8.15 बजे होगी धर्म सभा

जयपुर (विश्व परिवार)। संत शिरोमणि आचार्य 108 विद्यासागर महामुनिराज के परम प्रभावक शिष्य अर्हम योग प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज के मुखारबिन्द से मीरा मार्ग के आदिनाथ भवन पर कवि भूधरदास द्वारा विरचित पार्श्वनाथ पुराण के चौथे अधिकार का वाचन किया गया। जिसमें बताया गया कि हम सब स्वयं को कर्ता मानकर अहंकार को पृष्ठ करते हैं। हर अच्छे काम का क्रेडिट स्वयं लेते हैं और यदि काम नही होता है तो उसके लिए अज्ञानी लोग भगवान को जिम्मेदार ठहराते है। जबकि किसी भी कार्य को सफल होने में अंतरग एवं बहिरंग कारणों का एक साथ होना जरूरी है। पुरुषार्थ एवं भाग्य इन दोनों के एक साथ होने पर ही किसी भी कार्य की सफलता निर्भर करती है। हमें कर्ता भाव नहीं लाना चाहिए। सभी कार्य कर्म के अधीन है। भूतकाल के चक्कर में वर्तमान को खराब नहीं करना चाहिए। मुनि श्री ने कहा कि हमारे सामने जैसे पदार्थ होते हैं वैसे ही हमारे भाव हो जाते हैं। यदि वीतराग मुद्रा देखोगे तो संयम भाव आयेगें और यदि सरागी देखोगे तो राग के भाव आयेगें। जैसा सामने कारण होता है, वैसे ही हमारे भाव हो जाते हैं।

इससे पूर्व आचार्य विद्यासागर महामुनिराज की संगीतमय पूजा की गई। आचार्य समय सागर महाराज एवं मुनि प्रणम्य सागर महाराज का अर्घ्य चढाया गया।

तत्पश्चात अर्हम चातुर्मास समिति 2024 के संरक्षक समाजश्रेष्ठी नन्द किशोर-शांति देवी, प्रमोद-नीना, सुनील-नीता, अनुपमा-युवराज पहाड़िया परिवार द्वारा संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महामुनिराज एवं आचार्य समय सागर महाराज के चित्र का जयकारों के बीच अनावरण किया गया। भगवान आदिनाथ के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन किया गया। तत्पश्चात मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के पाद पक्षालन एवं शास्त्र भेट करने का पुण्यार्जन किया।

समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील बैनाडा एवं उपाध्यक्ष तेज करण चौधरी ने बताया कि इससे पूर्व पहाड़िया परिवार ने मुनि श्री को श्रीफल भेट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। अतिथियों को समिति की ओर से तेजकरण चौधरी, अरुण पाटोदी, विजय झांझरी ने स्मृति चिन्ह भेट किया।

समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील बैनाडा एवं उपाध्यक्ष तेज करण चौधरी ने बताया कि मीरामार्ग के श्री आदिनाथ भवन पर मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में शुक्रवार, 23 अगस्त को प्रात: 8.15 बजे श्री पार्श्वनाथ कथा का संगीतमय आयोजन आयोजन किया जाएगा।इस मौके पर आचार्य विद्यासागर महामुनिराज की पूजा एवं मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज के मंगल प्रवचन होगें। मुनि श्री की आहारचर्या प्रात: 9:40 बजे होगी। दोपहर में 3.00 बजे शास्त्र चर्चा होगी। गुरुभक्ति एवं आरती सांय 6:30 बजे एवं वैयावृत्ति रात्रि 8:30 बजे होगी।

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 374 दिनांक 21.08.2024
वार्ड का नाम- खुबचंद बघेल वार्ड
वार्ड क्र. 33 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **33** मांग **पंजी क्र. 69 युआईडी 28140** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **बाहरू राम देवांगन/तिजऊ राम देवांगन** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **घनश्याम देवांगन/स्व. बाहरूराम देवांगन** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **20-09-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 375 दिनांक 21.08.2024
वार्ड का नाम- भारत माता वार्ड
वार्ड क्र. 30 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **30** मांग **पंजी क्र. 24 युआईडी 26752** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **ओंकार वर्मा / वीरसिंग वर्मा** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **सहनाज खातून/मोहम्मद जुबैर खातून** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **20-09-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 376 दिनांक 21-08-2024
वार्ड का नाम- महात्मा गांधी वार्ड
वार्ड क्र. 32 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **32** मांग **पंजी क्र. 203 युआईडी 27746** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **विमला बाई दुबे/ मोती लाल दुबे** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **1. भावना शुक्ला, 2. नीलू शुक्ला 3. चांदनी शुक्ला/कृष्ण कुमार शुक्ला** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **20-09-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि सामान्य आवास योजनांतर्गत कॉलोनी, दोन्देखुर्द रायपुर में स्थित **सीनि. एल.आई.जी. भवन क्रमांक-655, श्री के. किशोर राव पिता श्री के. लोकनाथ राव, निवासी- सीनि.एल.आई. जी.भवन कमांक -655 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, दोन्देखुर्द रायपुर (छ.ग.)** को इस कार्यालय के नामांतरण आदेश क्रमांक 291 दिनांक 11.09.2023 को स्वविित्तय / भाड़ाक्रय आधार पर नांमातरित किया गया था। उनके द्वारा दिनांक 17.10.2023 को हस्तांतरण विलेख (फ्री-होल्ड) निष्पादित करा लिया गया है। हस्तांतरण विलेख निष्पादन उपरांत उक्त भवन को केता **श्रीमती सुनीता चन्द्राकर पति श्री सीताराम चन्द्राकर, निवासी- ग्राम व पो-पलौद, तहसील-आरंग, जिला-रायपुर (छ.ग.)** के पक्ष में दिनांक 25.10.2023 को विक्रय कर दिया गया है। वर्तमान में क्रेता **श्रीमती सुनीता चन्द्राकर पति श्री सीताराम चन्द्राकर,** द्वारा उक्त भवन को (फ्री-होल्ड) पश्चात अपने नाम पर मण्डल अभिलेख में दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त भवन के फ्री-होल्ड उपरांत मण्डल अभिलेख में दर्ज के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नही किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /13925/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 21-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13925
वार्ड का नाम- 02 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 02 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR802J00458** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ARCHANA PANDEY** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SANJEEV PANDEY** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MANTU PATI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SAMIT PATI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-

आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /13943/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 22-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13943
वार्ड का नाम- 02 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 02 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR802I01747** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **VIKASH MAHARSHI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BANSHIDHAR MAHARISHI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **DHANENDRA KUMAR GUPTA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BHAILAL GUPTA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-

आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /13952/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 22-08-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 13952
वार्ड का नाम- 02 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 02 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR802K01261** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **NANDANI SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **AJURAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **AAJU RAM SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DUKHURAM SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-

आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

प्रदेश के किसानों को मिला 6281 करोड़ रूपए का अल्पकालीन कृषि ऋण

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के निर्देश पर राज्य के अधिक से अधिक किसानों को अल्पकालीन कृषि ऋण वितरण किया जा रहा है। प्रदेश में किसानों को अब तक राज्य सहकारी बैंकों के द्वारा 2058 सहकारी समितियों के माध्यम से लगभग 6281 करोड़ रूपए का अल्पकालीन कृषि ऋण वितरण किया गया है। इस वर्ष राज्य सरकार द्वारा किसानों को 7300 करोड़ रूपए ऋण वितरण का लक्ष्य रखा गया है। किसानों को उनके मांग और रकबे के अनुरूप अल्पकालीन कृषि ऋण प्रदान किया जा रहा है। जबकि पिछले वर्ष आज की स्थिति में 6 हजार 193 करोड़ रूपए के अल्पकालीन कृषि ऋण वितरित किए गए थे। गौरतलब है कि राज्य सरकार द्वारा किसानों को खेती-किसानी की प्रारंभिक जरूरतों को पूरा करने तथा खेती-किसानी में सहूलियत प्रदान करने के उद्देश्य से किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) योजना प्रारंभ किए गए हैं।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शुक्रवार 23 अगस्त 2024

सिंगल विंडो सिस्टम से उद्योगों से जुड़ी सुविधाओं का अब एक ही प्लेटफार्म पर मिलेगा लाभ-कलेक्टर

यह उद्यमियों के लिए सुविधाजनक होगा।

रायगढ़(विश्व परिवार)। जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र रायगढ़ द्वारा कलेक्ट्रेट में सिंगल विंडो सिस्टम 2.0 को लेकर जिला स्तरीय कार्यशाला आयोजित की गई। जिसमें जिले के उद्यमियों को सिंगल विंडो सिस्टम के क्रियान्वयन के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई। कलेक्टर श्री कार्तिकेया गोयल भी कार्यशाला में शामिल हुए। उन्होंने उद्यमियों से कहा कि प्रदेश में उद्यमियों के सेवा सुलभता के लिए एक सिंगल प्लेटफार्म लॉन्च किया गया है। उन्होंने कहा कि यह उद्यमियों के लिए सुविधाजनक होगा। इससे एक ही जगह पर आवेदक अपने आवेदन से जुड़ी अनुमति, लाइसेंस, क्लियरेंस आदि से संबंधित

सुविधाएं प्राप्त कर सकेगा। उन्होंने उद्यमियों को आयात निर्यात से जुड़ी योजनाओं का लाभ लेकर अपना व्यापार विस्तार की बात कही। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा स्थानीय उत्पादकों और उद्यमियों को विदेश में निर्यात प्रोत्साहन देने के लिए एग्जिबिशन के माध्यम से अपने प्रोडक्ट डिस्प्ले का मौका दिया जाता है। इसके लिए कई प्रकार की रियायतें भी दी जाती हैं। रायगढ़ प्रदेश का प्रमुख औद्योगिक जिला है। यहां के उद्यमियों को आयात निर्यात योजनाओं का लाभ अवश्य लेना चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने पोर्टल में हेल्प डेस्क, शिकायत निवारण ट्रैकिंग मैकेनिज्म, स्थायी प्रकृति के दस्तावेजों के एक बार अपलोड किए जाने की सुविधा एनआईसी के माध्यम से उपलब्ध कराये जाने का सुझाव उद्योग विभाग के अधिकारियों को दिए। कार्यशाला में अधिकारियों ने बताया कि मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने सिंगल विंडो सिस्टम 2.0 ऑनलाइन पोर्टल का शुभारंभ किया है।

विकास को गति देने में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का अहम् भूमिका : कलेक्टर दीपक सोनी

बलौदाबाजार(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक सोनी की अध्यक्षता में मंगलवार को संयुक्त जिला कार्यालय के सभकक्ष में भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, विकसित भारत हेतु महत्वपूर्ण अनिवार्यता विषय पर विस्तार से जानकारी दी गई। कलेक्टर सोनी ने कहा कि आज के दौर में प्रतिस्पर्धा हर क्षेत्र में बढ़ा है। स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकास को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विभागीय क्रय -विक्रय में नियमों का पालन करते हुए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। योजना बनाते समय आवश्यक सावधानियों का ध्यान रखा जाना चाहिए। आयोग के नोडल अधिकारी डी.आर. वाधवानी ने आयोग के गठन, संवैधानिक निकाय, कार्य, प्रतिस्पर्धा अधिनियम, हितधारक,विभिन्न संघ, गैर प्रतिस्पर्धा को पहचानने के लक्षण आदि पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के अधीन एक सांविधिक निकाय है जिसका गठन 2002 में हुआ है। आयोग का कार्यालय नई दिल्ली में स्थित है। आयोग के मुख्य उद्देश्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा संस्कृति को बढ़ावा देना, प्रतिस्पर्धा संस्कृति की निरंतरता बनाये रखना, उपभोक्ता कल्याण में वृद्धि,स्वस्थ प्रतिस्पर्धा हेतु जागरूकता,कारोबार में नवाचार एवं स्वतंत्रता,प्रतिस्पर्धा पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली पद्धतियों पर रोक लगाना है। आयोग के अधिकारों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि आयोग कार्टेल को गैर कानूनी घोषित कर सकता है, समन भेजने, सर्च एंड सीज के अधिकार तथा सिविल न्यायलय की भी शक्तियां हैं। गैर प्रतिस्पर्धी टेंडर,बोली में हेरफेर, अतिप्रभावशील स्थिति का दुरुपयोग, प्रतिस्पर्धा रोधी करार को अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा क स्वरुप बताया गया। कार्यशाला में सीईओ जिला पंचायत दिव्या अ ग्र वा ल, स भी एसडीएम,तहसीलदार, जनपद सीईओ,सीएमओ एवं विभिन्न विभागों के जिलाधिकारी उपस्थित थे।

भारत बंद के समर्थन में उरगा में बंद रही दुकानें, घण्टों रहा चक्काजाम

कोरबा(विश्व परिवार)। समुदाय के आव्हान पर बुधवार 21 अगस्त 2024 को आयोजित भारत बंद का समर्थन करते हुए छत्तीसगढ़ प्रदेश के कांग्रेस कमेटी अनु-जनजाति विभाग के प्रदेश सचिव समेलाल जगत और आम आदमी पार्टी के जिला उपाध्यक्ष भूषण कुर्रे के संयुक्त नेतृत्व में उरगा चौक में बंद एवं चक्काजाम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उरगा के सभी व्यवसायिक प्रतिष्ठान बंद रहे। इसके अलावा कोरबा चाम्पा, कोरबा बिलासपुर और कोरबा करतला मार्ग पर यात्री वाहनों का संचालन भी ठप्प रखा गया। लगभग तीन घण्टे तक सभी मार्गों पर यातायात अवरुद्ध रहा। बन्द को देखते हुए बड़ी संख्या में मौके पर पुलिस बल की तैनाती की गई थी। हालांकि पूरा आयोजन शांति पूर्वक सम्पन्न हुआ। बन्द को सफल बनाने में पूर्व रामपुर विधायक श्यामलाल कंवर, आत्माराम सरपंच उरगा, मेलाराम दिवाकर- संयुक्त सचिव जिला कांग्रेस कमेटी कोरबा, डायमंड पाटले, शैलेन्द्र कुर्रे, महामंत्री भीम रेजिमेंट कोरबा, आदित्य कुर्रे जिला अध्यक्ष युवा प्रकोष्य भीम रेजिमेंट कोरबा, प्रभात सोनवानी, रामरतन खूंटे, पुष्पेंद्र कुर्रे, आमित रात्रे, शुभम अनंत, परमेश्वर सिंह कंवर, रामलाल जगत, मानसिंह कंवर, जय कुमार जगत, काशी वैष्णव, अमर खान्डे, विधायक प्रतिनिधि, विक्की कंवर जनपद उपाध्यक्ष कोरबा, धनेश्वर दस महंत, बुधवारू लाल कोसले, ब्लाक अध्यक्ष आम आदमी पार्टी रामपुर आदि ने अपना योगदान दिया।

मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए स्वास्थ्य विभाग चला रहा जागरूकता कार्यक्रम

बलौदाबाजार(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक सोनी के निर्देश पर स्वास्थ्य विभाग तथा न्यूवोको सीएसआर के समन्वय से ग्राम रिसदा, ढनढनी और कुकरदी में मौसमी बीमारियों से बचाव हेतु जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इसके साथ ही पात्र लोगों के आयुष्मान कार्ड भी बन रहे हैं। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ राजेश अवस्थी ने बताया कि, प्राथमिकता के अनुरुप स्वास्थ्य विभाग तथा न्यूवोको कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सी एस आर) के समन्वय से यह कार्यक्रम ज़ारी है। जिसमें बीमारियों से बचाव व रोकथाम के लिए स्वास्थ्य जागरुकता एवं आयुष्मान कार्ड बनाये जाने हेतु अभियान का संचालन किया जा रहा है। इसके तहत मितानिन तथा सी.एस.आर. के कार्यकर्ता घर घर जाकर ग्रामीणों को बरसात के मौसम में फैलने वाली बीमारियों तथा उससे बचने के उपाय के बारे में बताकर जागरुक कर रहे साथ ही स्वच्छता को अनिवार्य रुप से अपनाने हेतु प्रेरित किया जा रहा है। मितानिन द्वारा बुखार के चिन्हित मरीजों की रक्त पट्टिका बनाई जा रही तथा बीमारी से पीडित मरीजों का रिकार्ड बनाकर% हेल्थ एंड %वेलनेस सेंटर मे सूचित किया जा रहा है.जिससे उनका त्वरित समुचित उपचार हो सके। स्वास्थ्य विभाग द्वारा दल को ऐसे पात्र हितग्रहियों की सूची भी उपलब्ध कराई गई है जिनका आयुष्मान कार्ड बनाया जाना है ताकि पंचायत में शत प्रतिशत कार्ड के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके.इस कार्यक्रम की निगरानी खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ अभिजीत बैनर्जी सी.एस.आर.के क्लस्टर हेड चन्द्रशेखर उपाध्याय तथा रिसदा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के डॉक्टर अविनाश केसरवानी कर रहे हैं।

लापता युवक का जंगल में मिला शव सीने में मारी गई तीन गोलियां

अंबिकापुर(विश्व परिवार)। अंबिकापुर के बड़े व्यवसायी और अंबिका स्टील इंडस्ट्रीज के संचालक के पुत्र का शव बुधवार सुबह गांधीनगर थानाक्षेत्र के चठिरमा में जंगल किनारे मिला है। युवक मंगलवार से लापता था जिसको परिजन तथा पुलिस तलाश कर रही थी। बताया जा रहा है कि युवक की गोली मारकर हत्या की गई है। मामले में पुलिस ने अंबिका स्टील के पूर्व कर्मचारी को हिरासत में लिया है तथा पुछताछ कर रही है। मिली जानकारी के अनुसार अंबिका स्टील इंडस्ट्रीज के संचालक महेश केडिया का पुत्र अक्षत अग्रवाल (25) मंगलवार शाम अपनी कार लेकर घर से निकला था। शाम को जब परिजनों ने उसे फोन किया तो उसका फोन बंद बता रहा था। परिजन परेशान होकर उसकी तलाश में जुट गये थे तथा देर रात तक उसका पता नहीं चलने पर परिजनों ने गांधीनगर पुलिस थाने में गुमशुदगी की सूचना दी। इधर रात भर भी अक्षत घर नही लौटा और बुधवार की उसकी लाश मिलने की सूचना मिली। दरअसल कुछ लोगों ने चठिरमा गौशाला से लगे जंगल के पास एक हुंडई कार संदिग्ध अवस्था में देखी जिसकी ड्राइवर सीट पर एक युवक मृत अवस्था में था। लोगों ने इसकी सूचना गांधीनगर पुलिस को दी। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव देखा तो उसकी शिनाख्त लापता अक्षत अग्रवाल के रूप में हुई। जिसके बाद पुलिस ने इसकी सूचना उसके परिजनों को दी। जांच में पुलिस को पता चला कि अक्षत की गोली मारकर हत्या की गई है। बताया जा रहा है कि अक्षत के सीने में तीन गोलियां मारी गई है। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि मंगलवार को अक्षत केडिया के साथ पूर्व में अंबिका स्टील इंडस्ट्रीज में काम करने वाले संजीव मंडल को कार में देखा गया था। जिसके आधार पर पुलिस ने पूर्व कर्मचारी संजीव मंडल को संदेही मानते हुए हिरासत में लिया है और पुछताछ कर रही है।

विधायक भावना ने गन्ना किसानों को रियायती दर पर वितरित की 50 किलो शक्कर

कवर्धा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के गन्ना किसानों को बड़ी सौगात देते हुए भाजपा सरकार द्वारा शेयरधारक किसानों को फिर से किफायती दाम पर शक्कर वितरित की जा रही है। पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल सहकारी शक्कर कारखाना, पंडरिया के शेयरधारक गन्ना किसानों को 50 किलो शक्कर का वितरण कर उन्हें बधाई दी। पूर्व में इस योजना के तहत गन्ना किसानों को शक्कर वितरित की जाती थी, लेकिन छत्तीसगढ़ में कांग्रेस सरकार के आने के बाद इस प्रक्रिया को बंद कर दिया गया था। विधायक भावना बोहरा ने इस विषय को विधानसभा में उठाया था और किसानों के लिए शक्कर वितरण की पुन: शुरुआत की मांग की थी। प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने के बाद इस क्रिया को पुन: शुरू

किया गया, जिससे गन्ना उत्पादन करने वाले किसानों में खुशी की लहर है। इस कार्यक्रम में राजनांदगांव लोकसभा सांसद संतोष पांडेय भी उपस्थित थे। उन्होंने सभी लाभान्वित किसानों को बधाई देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार और छत्तीसगढ़ की भाजपा सरकार ने हमेशा किसानों के हितों को सर्वोपरि रखा है और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं संचालित की हैं। विधायक भावना बोहरा ने इस अवसर पर कहा, आज शक्कर कारखाने के शेयरधारक किसानों को पांच वर्षों के बाद उनका अधिकार मिलता देख बहुत प्रसन्नता हो रही है। भाजपा सरकार हमेशा से ही किसानों के कल्याण और सम्मान के लिए कार्य करती रही है। शक्कर कारखाने में कुल 11,892 शेयरधारक किसान हैं, जिन्हें 25 रुपये/किलो की किफायती दर पर 50 किलो शक्कर का वितरण किया गया। लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल सहकारी शक्कर कारखाना, पंडरिया, रिकवरी के मामले में पूरे भारत में दूसरे स्थान पर है। पेराई सत्र 2023-24 में 7741 किसानों से 3.13 लाख टन गन्ने की खरीदी की गई, जो पिछले पांच वर्षों में सर्वाधिक है। इस साल किसानों को 91.38 करोड़ रुपये का भुगतान होना है, जिसमें से 71.92 करोड़ रुपये का भुगतान पूरा हो चुका है और शेष राशि का भुगतान 30 सितंबर तक होने की उम्मीद है। विधायक बोहरा ने बताया कि वर्तमान में गन्ना किसानों का लगभग 19.47 करोड़ रुपये का भुगतान बकाया है, जिसके जल्द निपटारे के लिए वे लगातार प्रयासरत हैं। विधानसभा में उन्होंने शक्कर कारखाने की क्षमता को दोगुना करने का भी प्रस्ताव रखा है, जिससे किसानों को अधिक लाभ मिल सके। इस अवसर पर भाजपा के विभिन्न मंडल अध्यक्ष, मोर्चा व प्रकोष्ठ के पदाधिकारी, कार्यकर्ता, किसान एवं क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

आकाशीय बिजली की चपेट में आकर 20 मवेशियों की मौत

कोरबा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में आकाशीय बिजली की चपेट में आने से 20 मवेशियों की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस में मौके का निरीक्षण किया। पोस्टमार्टम के लिए पशु चिकित्सा विभाग को जानकारी दी गई। घटना कोरबा विकासखंड से करीब 20 किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत केराकछार की है। मिली जानकारी के अनुसार केराकछार के ग्रामीणों ने मवेशियों को चराने 2 चरवाहे की व्यवस्था की है। प्रतिदिन की तरह बुधवार की सुबह भी चरवाहे मवेशियों को लेकर चराने जंगल गए थे। वे 11 बजे गांव के करीब एक जगह पर आराम कर रहे थे। थोड़ी दूर में ही मवेशी भी बैठे थे। इस बीच अचानक मौसम बदला। तेज गरज के साथ बूंदाबांदी होने लगी। चरवाहे मवेशियों को लेकर बस्ती की ओर ले जाते, इससे पहले ही आकाशीय बिजली गिरी। जिसकी चपेट में आने से 9 गाय, 7 बैल और 4 बछड़े की मौके पर मौत हो गई, जबकि कई मवेशी झुलस गए। इसी दौरान चरवाहे थोड़ी दूरी पर थे जिसके कारण उनकी जान बच गई। चरवाहों ने गांव पहुंचकर घटना की जानकारी दी। ग्रामीणों मौके पर पहुंचे और इसकी सूचना पुलिस को दी गई। सूचना पर रजगामार पुलिस चौकी प्रभारी मानसिंह ध्रुव अपनी टीम के साथ घटनास्थल पहुंचे। उन्होंने मौके का मुआयना करते हुए पोस्टमार्टम के लिए पशु चिकित्सा विभाग को जानकारी दी।

निगम लगातार कर रहा सड़कों से मवेशी हटाने का कार्य

कोरबा(विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम कोरबा द्वारा मुख्य मार्गो, संपर्क सड़कों एवं सार्वजनिक स्थानों से काऊकेचर के माध्यम से मवेशियों को हटाने का कार्य लगातार किया जा रहा है। कार्य के सहायक नोडल अधिकारी डॉ.संजय तिवारी ने बताया कि आयुक्त सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई के निर्देश पर निगम द्वारा तानसेन चौक से सीतामणी तक एवं विभिन्न उपनगरीय क्षेत्रों, आंतरिक संपर्क सड़कों में अभियान चलाकर सड़कों पर स्वच्छंद विचरण करने वाले मवेशियों को काऊकेचर के माध्यम से सुरक्षित रूप से उठाया जा रहा है तथा यह अभियान निरंतर चलेगा। आयुक्त सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई ने पशुपालकों, डेयरी संचालकों से अपील करते हुए कहा है कि वे अपने मवेशियों को सड़कों, सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छंद विचरण हेतु न छोड़े। मवेशियों के सड़कों पर स्वच्छंद विचरण से दुर्घटनाएं घटित होने, आवागमन करने वाले नागरिकों को अनावश्यक असुविधाओं होने तथा पशुओं के भी चोटिल होने की संभावना बनी रहती है। अत: मवेशियों को अपने घर पर ही सुरक्षित रूप से रखें।

आयुष विभाग ने विद्यालय के बच्चों को आयुर्विद्या के बारे में दी जानकारी

सूरजपुर(विश्व परिवार)। आयुष मंत्रालय भारत सरकार एवं छत्तीसगढ़ शासन के आयुष विभाग के द्वारा विद्यालयों में कक्षा पहली से लेकर 12वीं तक के बच्चों का निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण कर उनको आयुर्विद्या के बारे में जानकारी के साथ स्वास्थ्य जागरूकता, दिनचर्या आयुर्वेद के बारे में संक्षेप में विवरण, संतुलित आहार, किशोरी बालिकाओं में माहवारी जागरूकता, योग प्राणायाम का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव के संबंध में जानकारी, जंक फास्ट फूड पैकेट फूड के दुष्प्रभाव के बारे में जानकारी, वात पित्त कफ प्रकृति के संबंध में जानकारी, वर्षा ऋतु एवं वर्षा ऋतु में होने वाली संक्रामक बीमारियों से बचाव के संबंध में जानकारी, इसके साथ ही औषधिया पौधों की जानकारी के बारे में बताया गया, आज प्राथमिक शाला नवापारा सूरजपुर में बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया उनका वजन लंबाई नापा गया आयुर्विद्या के बारे में, आयुर्वेद के बारे में हस्त प्रक्षालन योग के बारे में जानकारी दी गई एवं पांच अशुद्धिय पौधों जैसे गिलोय ,तुलसी, नीम, करंज, मुनगा, के बारे में जानकारी दी गई इसमें 81 बच्चों का नि:शुल्क परामर्श दिया गया ।

संभागायुक्त ने किया रीपा का निरीक्षण

बिलासपुर(विश्व परिवार)। संभागायुक्त नीलम नामदेव एक्का ने बेलपान (तखतपुर) रीपा का निरीक्षण किया। उन्होंने यहां अलग-अलग उद्यम एवं सेवा केन्द्र संचालित कर रहे उद्यमियों और महिला समूहों की इकाईयों का अवलोकन कर उनका मनोबल बढ़ाया। संचालित गतिविधियों की जानकारी लेकर इन्हें और ज्यादा लाभकारी बनाने के लिए कुछ उपयोगी सुझाव भी दिए। एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत एक्का ने रीपा परिसर में जामुन के पौधे भी लगाए। इस अवसर पर जिला पंचायत सीईओ रामप्रसाद चौहान एवं एसडीएम डॉ. ज्योति पटेल, उपायुक्त अर्चना मिश्रा सहित विभागीय अधिकारी मौजूद थे।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर शुक्रवार 23 अगस्त 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

अंतत:अखंड भारत का सपना होगा साकार

डेरा सच्चा प्रमुख को फरलो

डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम सिंह को मंगलवार को 21 दिन की फरलो (अस्थायी रिहाई) दे दी गई। दुष्कर्म मामले में सजायाफ्ता राम रहीम रोहतक की सुनारिया जेल में सजा काट रहा है। नाबालिग से बलात्कार के दोष में आजीवन कारावास की सजा काट रहे आसाराम बापू को भी सात दिन के लिए जेल से बाहर निकलने का मौका मिला है। अलबत्ता, इस दौरान वह पुलिस हिरासत में पुणे के एक अस्पताल में उपचाराधीन रहेगा। राजस्थान उच्च न्यायालय ने इस बाबत अनुमति दी है। सितम्बर, 2013 में गिरफ्तार किया गया आसाराम (83) हृदय संबंधी बीमारी से ग्रस्त है। आसाराम बापू को पुलिस हिरासत में इलाज की अनुमति दिया जाना हो सकता है कि किसी को न अखरे लेकिन डेरा सच्चा प्रमुख को फरलो दिए जाने से यकीनन कोई भी सहज न होगा। दुष्कर्म का दोषी डेरा सच्चा सौदा प्रमुख चुनाव से कुछ दिन पहले 'फलरे' पर छोड़ा जाता रहा है। कुछ लोग इसके राजनीतिक मंतव्य भी निकालते हैं। डेरा सच्चा सौदा के लाखों अनुयायी देश भर में हैं, और राजस्थान के कुछ जिलों और हरियाणा के पंजाब और राजस्थान से लगते इलाकों में तो सघनता से बसे हुए हैं। डेरा सच्चा सौदा के देश भर में अनेक आश्रम हैं और इनसे जुड़े अनुयायी भी काफी संख्या में हैं। इस प्रकार उसके लाखों अनुयायी अच्छा-खासा वोट बैंक हैं। वैसे, डेरा सच्चा सौदा प्रमुख के मामले में ही ऐसा नहीं है। जितने भी डेरे-आश्रम हैं, सबके सब वोट की राजनीति के चलते राजनेताओं को प्रिय हैं। हरियाणा में अगले कुछ महीनों में विधानसभा के चुनाव होने हैं। इसलिए ऐन चुनाव से पूर्व उसे 'फरलो' दिए जाने से कोई चौंका तो नहीं लेकिन दुख जरूर हुआ कि राजनीतिक नफे-नुकसान के चलते अपराधियों के प्रति इद कदर उदारता बरती जाती है। यह कानून व्यवस्था का मजाक उड़ाने जैसा है। ऐसा नहीं है कि 'फरलो' को विवेकशील लोग अनदेखा किए हुए हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति (एसजीपीसी) ने तो बाकायदा पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय में उसको 'फरलो' दिए जाने के खिलाफ याचिका भी डाल दी थी। लेकिन इसका निपटारा किए जाने के कुछ दिन बाद ही 'फरलो' दिए जाने से पता चलता है कि वोट बैंक के तकाजे व्यवस्था पर भी भारी पड़ जाते हैं। सुप्रीम कोर्ट को इसका संज्ञान लेना चाहिए।

प्रह्लाद सबनानी

प्राचीन काल में भारत विश्व गुरु था। आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों सहित लगभग समस्त क्षेत्रों में भारतीय सनातन संस्कृति का दबदबा था। भारत को उस खंडकाल में सोने की चिड़िया कहा जाता था। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी 15 अगस्त 2024 को पूरे भारतवर्ष में 77वां स्वतंत्रता दिवस बहुत ही धूम धाम से मनाया गया। दरअसल, भारतीय नागरिक 15 अगस्त 1947 के पूर्व अंग्रेजों के शासन के अंतर्गत पराधीन थे एवं 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों के शासन से मुक्त होकर भारतीय नागरिक स्वाधीन हुए। इसलिए इस पर्व को स्वाधीनता दिवस कहना अधिक तर्कसंगत होगा। स्वतंत्र शब्द दो शब्दों से मिलाकर बना है (1) स्व; एवं (2) तंत्र। अर्थात स्वयं का तंत्र, इसलिए स्वतंत्रता दिवस कहना तो तभी न्यायोचित होगा जब स्वयं का तंत्र स्थापित हो। भारत के नागरिकों में आज स्व के भाव के प्रति जागृति तो दिखाई देने लगी है और वे भारत के हित सर्वोपरि हैं की चर्चा करने लगे हैं। परंतु, भारत में तंत्र अभी भी मां भारती के प्रति समर्पित भाव से कार्य करता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है, जिससे कभी कभी असामाजिक तत्व अपने भारत विरोधी एजेंडा पर कार्य करते हुए दिखाई दे जाते हैं और भारत के विभिन्न समाजों में अशांति फैलाने में सफल हो जाते हैं। स्व के तंत्र के स्थापित होने से आशय यह है कि देश में हिंदू सनातन संस्कृति का अनुपालन सुनिश्चित हो। प्राचीन काल में भारत विश्व गुरु था। आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों सहित लगभग समस्त क्षेत्रों में भारतीय सनातन संस्कृति का दबदबा था। भारत को उस खंडकाल में सोने की चिड़िया कहा जाता था। भारत के विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने के उद्देश्य से पूरे विश्व से विद्यार्थी भारत में आते थे। भारत पर शक, हूण, कुषाण एवं यवन के आक्रमण हुए, परंतु भारत पर उनके कुछ समय के शासन के पश्चात वे भारतीय सनातन संस्कृति में ही रच बस गए एवं भारत का हिस्सा बन गए। परंतु, अरब के देशों से मुसलमान एवं ब्रिटेन से अंग्रेजों के भारत पर चले शासन के दौरान उन्होंने भारतीय नागरिकों का बलात धर्म परिवर्तन करवाया, स्थानीय नागरिकों पर अकल्पनीय अत्याचार किए। भारत के बड़े बड़े प्रतिष्ठानों, मंदिरों एवं ज्ञान के स्थानों को नष्ट किया। अंग्रेजों ने तो भारतीय नागरिकों के साथ छल कपट करते हुए यह भ्रम फैलाया कि

अंग्रेजों ने ही भारतीय नागरिकों को जीना सिखाया है अन्यथा भारतीय समाज तो असभ्य, अनपढ़ गंवार था। उन्होंने भारतीय सनातन संस्कृति पर गहरी चोट की। वे भारतीयों में हीन भावना भरने में सफल रहे। भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति को नष्ट किया। गुरुकुल नष्ट किए। अंग्रेजों को नौकर चाहिए थे अत: तात्कालिक शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन किए। इसी प्रकार की शिक्षा प्रणाली देश में आज भी चल रही है, जिसके अंतर्गत शिक्षित भारतीय केवल नौकरी करने के लिए ही उतावाले नजर आते हैं। वे अपना स्वयं का व्यवसाय स्थापित करने के प्रति रुचि ही प्रकट नहीं करते हैं। भारत में उद्योगपति अपने परिवार की विरासत से ही निकले हैं। भारत को आक्रांताओं एवं अंग्रेजों के शासन से मुक्त कराने के उद्देश्य से समय समय पर भारत के तत्कालीन राज्यों के शासकों ने युद्ध भी लड़े एवं अपने स्तर पर उस खंडकाल में सफलता भी अर्जित की। जैसे, शिवाजी महाराज, महाराणा प्रताप, राणा सांगा आदि के नाम मुख्य रूप से लिए जा सकते हैं। इसी प्रकार, अंगेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ने वाले वीर क्रांतिकारियों में रानी लक्ष्मीबाई, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद के नाम सहज रूप से लिए जा सकते हैं। स्वाधीनता प्राप्ति के उद्देश्य को लेकर मशाल आगे लेकर चलने वाले कई योद्धाओं में महात्मा गांधी, सरदार पटेल एवं सुभाषचंद्र बोस भी शामिल रहे हैं। इसी समय में विवेकानंद एवं डॉक्टर हेडगेवार ने भी सांस्कृतिक चिंतक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन सफलतापूर्वक किया था। इस प्रकार, अंतत: भारत को 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों के शासन से मुक्ति मिली एवं भारतीय नागरिकों को स्वाधीनता प्राप्त हुई। भारत के लिए यह एक नई सुबह तो थी परंतु यह साथ में विभाजन की त्रासदी भी लेकर आई थी। पूर्व एवं पश्चिमी पाकिस्तान के रूप में एक नए देश ने भी जन्म लिया और इस दौरान करोड़ों नागरिकों ने अपनी जान गवाईं थी। आखिर भारत का विभाजन हुआ क्यों? यदि इस विषय पर विचार किया जाय तो ध्यान में आता है कि दरअसल अंग्रेजों ने यह भ्रम फैलाया कि भारत में आर्य बाहर से आए हैं और इस प्रकार वे भारतीय नागरिकों में मतभेद पैदा करने में सफल हुए। साथ ही, उन्हें भारतीय नागरिकों में यह भाव पैदा करने में भी सफलता मिली कि भारत एक भौगोलिक इकाई है एवं यह कई राज्यों को मिलाकर एक देश बना है जबकि राष्ट्र एक सांस्कृतिक इकाई होती है न कि भौगोलिक इकाई। उस खंडकाल विशेष में अंग्रेजों द्वारा भारत में किया गया मुस्लिम तुष्टिकरण भी भारत के विभाजन के लिए जिम्मेदार है। राष्ट्रवादी मुसलमानों की उपेक्षा की गई थी एवं उस समय की जनभावना को बिलकुल ही नकार दिया गया था, इसके उदाहरण के रूप में 'वन्दे मातरम' कहने पर अंकुश लगाना एवं राष्ट्रीय ध्वज के रूप में भगवा ध्वज को स्वीकार नहीं करना, का वर्णन किया जा सकता है। और फिर, उस समय विशेष पर भारत का नेतृत्व भी मजबूत हाथों में नहीं था। उक्त कई कारणों के चलते भारत को विभाजन की विभीषिका को झेलना पड़ा था और करोड़ों नागरिक इससे बहुत बुरी तरह से प्रभावित हुए थे। वैसे तो भारत को पूर्व में भी खंडित किया जाता रहा है परंतु वर्ष 1947 में हुआ विभाजन सबसे अधिक वीभत्स रहा है। वर्ष 1937 में म्यांमार भारत से अलग हुआ था, वर्ष 1914 में तिब्बत को भारत से अलग कर दिया गया था, वर्ष 1906 में भूटान एवं वर्ष 1904 में नेपाल को भारत से अलग कर दो नए देश बना दिये गए थे एवं वर्ष 1876 में अफ़ग़ानिस्तान ने नए देश के रूप में जन्म लिया था। यह सभी विभाजन भारत को पावन भूमि को विखंडित करते हुए सम्पन्न हुए थे। यह सिलसिला वर्ष 1947 में स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात भी रुका नहीं एवं वर्ष 1948 में भारत के भूभाग को विखंडित कर श्रीलंका के रूप में नए देश का जन्म हुआ। वर्ष 1948 में ही पाकिस्तान के कुछ कबीलों ने भारत के कश्मीर क्षेत्र पर आक्रमण कर कश्मीर के एक हिस्से को अपने कब्जे में ले लिया था, जिसे आज 'पाक आकुपाईड कश्मीर' कहा जाता है। वर्ष 1962 में आक्साई चिन भी भारत से विखंडित हो गया था। उक्त विखंडित हुए भूभाग से भारत का नाता आज भी बना हुआ है। जैसे, अफ़ग़ानिस्तान में बामियान बुद्ध की मूर्तियां स्थापित रही हैं, जिन्हें बाद के खंडकाल में तालिबान ने खंडित कर दिया है। महाभारत काल में गांधारी आज के अफ़ग़ानिस्तान राज्य की निवासी रही है। अफ़ग़ानिस्तान शिव उपासना का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। इसी प्रकार पाकिस्तान में तो तक्षशिला विश्वविद्यालय रहा है, जिसमें विश्व के अन्य देशों से विद्यार्थी अधध्यन के लिए आते थे। हिंगलाज माता का मंदिर है, भगवान झूलेलाल का अवतरण इस धरा पर हुआ था, साधु बेला, संत कंवरराम, ऋषि पिंगल, ऋषि पाणिनि भी इसी धरा पर रहे हैं। भगत सिंह, लाला लाजपत राय एवं आचार्य कृपलानी जैसे देशभक्तों ने भी इसी धरा पर जन्म लिया था। बंगला देश में भी आज ढाकेश्वरी मंदिर स्थित है जिसके नाम पर ही बांग्लादेश की राजधानी को ढाका कहा जाता है। जगदीश चंद्र बोस एवं विपिन चंद्र पाल जैसे महान देशभक्तों ने भी इसी धरा पर जन्म लिया है। नेपाल तो अभी हाल ही के समय तक हिंदू राष्ट्र ही रहा है एवं यहां पर कैलाश मानसरोवर, पशुपति नाथ मंदिर, जनकपुर जहां माता सीता का जन्म हुआ था एवं विश्व प्रसिद्ध लुम्बिनी, आदि नेपाल में ही स्थित हैं। इस दृष्टि से यह ध्यान में आता है कि भारत को एक बार पुन: अखंड क्यों नहीं बनाया जाना चाहिए क्योंकि भारत से अलग हुए इन सभी देशों की सांस्कृतिक विरासत तो एक ही दिखाई देती हैं।

आलेख

सत्तापक्ष हो या विपक्ष राष्ट्रीय सुरक्षा सर्वोपरि

अवधेश कुमार

संसद का बजट सत्र समाप्त हो गया, लेकिन लोक सभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी का भाषण और सत्तारूढ़ गठबंधन के सांसदों, मंत्रियों और नेताओं द्वारा दिए गए प्रत्युत्तर ने ऐसे अनेक प्रश्न उठाए हैं, जिनका उत्तर तलाशना ही होगा। संसद में हमने कभी भी इस तरह के नैरेटिव और परिदृश्य नहीं देखे। राहुल गांधी ने विपक्ष के नेता के रूप में जिस तरह का भाषण दिया वैसा पहले कभी सुना नहीं गया। हालांकि पिछले दो वर्षों की उनकी राजनीति पर गहराई से दृष्टि रखने वालों के लिए यह अपेक्षित है। 17वीं लोक सभा के बाद के काल के लोक सभा में और बाहर उनके भाषणों और वक्तव्यों में एक क्रमबद्धता है। वह भले विवेकशील लोगों को पसंद न आए या पुराने कांग्रेसियों को भी स्वीकार नहीं हो किंतु वह इसी तरह की भाषा बोलते रहे हैं। चूंकि विपक्ष के नेता के रूप में वह बजट पर चर्चा कर रहे थे इसलिए स्वाभाविक ही मुख्य फोकस इसी पर होना चाहिए था। इस समय उनके सलाहकारों, रणनीतिकारों, थिंक टैंक आदि की रणनीति यही है कि हर अवसर पर ऐसा भाषण या वक्तव्य देना है जिनसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा की छवि जनता में दागदार हो, ऐसे मुद्दे उठे जिनका सीधा-सीधा उत्तर देना कठिन हो और इसके लिए किसी सीमा को स्वीकार करने की जरूरत नहीं। सामान्य तथ्यगत विरोध आक्रामकता के साथ होना कतई चिंता का विषय नहीं होगा। स्थिति इससे बहुत आगे है। भारत और भारत से जुड़े वैश्विक नैरेटिव समूहों की स्थिति ऐसी है जिसमें हमें ज्यादातर एकपक्षीय स्वर इतने प्रभावी से सुनाई पड़ते हैं कि उनमें आसानी से सच समझना कठिन हो जाता है। पूर्व केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर का लोक सभा भाषण इस मामले में सबसे ज्यादा निशाने पर है। अखिलेश यादव ने उस पर आपत्ति उठाते हुए कहा कि आप किसी की जाति कैसे पूछ सकते हैं? राहुल गांधी ने कहा कि अनुराग ठाकुर ने उनको अपमानित किया है लेकिन मैं इन लोगों की तरह नहीं हूं इन्हें क्षमा मांगने के लिए नहीं कहूंगा। ठाकुर भाजपा के वरिष्ठ नेता हैं, उनकी पार्टी सत्ता में है इसलिए कहा जा सकता है कि अति उत्तेजना और उकसावे के बीच भी उन्हें अंतिम सीमा तक संयम का परिचय देना चाहिए। दूसरे आप पर हमला करें और आप उसी भाषा में बोले तो फिर दोनों के बीच अंतर कठिन हो जाता है। किंतु नैरेटिव की दुनिया में वर्चस्व रखने वाले समूह ने एक पंक्ति नहीं कहा कि राहुल गांधी ने अपने भाषण में सत्तारूढ़ पार्टी को उकसाने, उत्तेजित करने या चिढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। यहां तक कि बार-बार वे लोक सभा अध्यक्ष को भी परोक्ष रूप में कठघरे में खड़ा करते रहे। अध्यक्ष ओम बिरला के टोकने या आपत्ति करने पर उनका उत्तर होता था कि सर, इसे कैसे बोलें या सॉरी सर सॉरी सर, लेकिन वह उसी बात को सॉरी कहते हुए दोहराते भी रहे। अध्यक्ष के लिए भी उनको संभालना या रोकना असंभव हो गया है। यह पहली बार होगा जब संसद के अंदर विपक्ष के नेता ने सरकार को घेरने के लिए ऐसण् उपमा दी, जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार तक घसीटे गए। चक्रव्यूह के बारे में राहुल गांधी को निश्चित रूप से कुछ गलत तथ्य दिए गए किंतु ऐसा हो जाता है। बावजूद उन्हें अपने पद के दायित्व का भान होना चाहिए था। सत्तापक्ष हो या विपक्ष राष्ट्रीय सुरक्षा सर्वोपरि है। आपका सरकार से राजनीतिक वैचारिक मतभेद है और उसे प्रकट करने का अधिकार भी। वैसे उसमें भी सीमा है कि हम विरोध में कहां तक जाते हैं। कभी भी राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार को इस तरह राजनीतिक दल के हमले के साथ जोड़ा नहीं गया। आप कल्पना करिए इसका संदेश देश के अंदर और बाहर क्या जाएगा। आंतरिक सुरक्षा हमारे देश में कितने नाजुक स्थिति में लंबे समय तक रहा है और बाहरी खतरे कितने बड़े हैं इसका अनुमान उन सब लोगों को है जो थोड़ा बहुत भी सुरक्षा स्थिति पर दृष्टि रखते हैं। इसमें राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है जिसे कभी सार्वजनिक नहीं किया जा सकता। राहुल गांधी के भाषण को आधार बनाकर देश के अंदर उनके समर्थक तथा सरकार विरोधी सीमा के पार भी भारत के अनेक सुरक्षा या विदेश नीति संबंधी निर्णयों को आसानी से निशाना बनाएंगे।

पुण्य श्लोक महारानी अहिल्याबाई होल्कर

शिवप्रकाश

पुण्यश्लोक महारानी अहिल्याबाई होल्कर की संपूर्ण देश 300वीं जन्म-जयंती मना रहा है। अनेक सामाजिक संस्थाएं एवं महिला संगठन उनके जयंती वर्ष में उनके अलग-अलग गुणों को प्रकट करने वाले कार्यक्रम एवं गोष्ठियों का आयोजन कर रहे हैं । अनेक सरकारें भी महारानी अहिल्याबाई के सुशासन, नगरीय विकास, रोजगारपरक उद्योग नीति जैसे विषयों पर संवाद आयोजित कर रही हैं। महारानी का जीवन एवं शासन शैली संवेदनशील, सादगी, सहजता, धर्मनिष्ठ, न्यायप्रिय एवं लोक कल्याणकारी थीं। इन्हीं गुणों के कारण उनकी प्रजा उन्हें सदैव लोकमाता के रूप में देखती थी। उनके अप्रतिम गुणों को देखकर ब्रिटिश इतिहासकार जॉन केयस ने उन्हें दार्शनिक रानी की उपाधि दी । अहिल्याबाई पिता मंकोजीराव शिंदे एवं माता सुशीलाबाई के परिवार में 31 मई 1725 को जन्मी थीं। उनका जन्मस्थान चौंडी (अहमदनगर, महाराष्ट्र) था, जो अब अहिल्यानगर के नाम से ही परिवर्तित हो गया है। धनगर जाति में जन्म लेने के बाद भी उनकी प्रतिभा को पहचानकर पेशवा बाजीराव एवं मल्हारराव होल्कर दोनों के परस्पर परामर्श के उपरान्त अहिल्याबाई का विवाह मल्हारराव ने अपने पुत्र खंडेराव के साथ संपन्न कराया । युद्ध में वीरगति प्राप्त होने के कारण उनको पति वियोग सहना पड़ा । अपने जीवन काल में उन्होंने श्वसुर मल्हार राव होल्कर, नवासे (पुत्री के पुत्र) एवं पुत्री सभी की असमय मृत्यु को देखा। इसी असहय वेदना को सहते- सहते वे स्वयं भी 70 वर्ष की उम्र में 1795 में संसार छोड़कर चली गई। पति की मृत्यु के पश्चात अपने श्वसुर के आग्रह पर उन्होंने राजकाज सम्हालना प्रारंभ किया। उनका शासन प्रजावत्सल, न्यायप्रिय, सुशासन का प्रतीक था। अपनी धर्म के प्रति भक्ति के कारण उन्होंने अपनी राजधानी इंदौर से परिवर्तित कर पवित्र नदी नर्मदा के किनारे महेश्वर में स्थानांतरित की । उनका महेश्वर में राजधानी स्थानान्तरित करने का उद्देश्य था कि राज्य संचालन के साथ-साथ वह माँ नर्मदा की सेवा एवं आराधना कर सकें । माँ नर्मदा के किनारे उनका महल एक सर्वस्व त्यागी सन्यासिनी का महल था । जिसमें उन्होंने अपनी आयु के 28 वर्ष व्यतीत किए थे। देश की सरकारें वर्तमान समय में अपनी आर्थिक नीतियों के केंद्र में समाज के जिस पिछड़े वर्ग के उत्थान एवं लघु उद्योग केंद्रित नीतियों का विचार करती हैं, आज से लगभग 300 वर्ष पूर्व महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने इस दूरदृष्टि का परिचय देते हुए 1745 में एक राजज्ञा द्वारा बुनकर, सुतार, कारीगरों से महेश्वर में निवास करने का आग्रह किया । आर्थिक विकास की दिशा में उनके द्वारा की गई अनेक पहल में से एक महेश्वर में निर्मित साड़ी आज भी संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है , जिसे महेश्वरी साड़ी के नाम से जाना जाता है । इस उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए वह स्वयं भी वहाँ निर्मित वस्त्र पहनती थी एवं देश- विदेश से आने वाले महानुभावों को भेंट स्वरूप इन्हीं वस्त्रों को प्रदान भी करती थीं । प्राकृतिक आपदा में किसानों का सहयोग, सेना के आवागमन से होने वाली फसलों की क्षतिपूर्ति की व्यवस्था भी उन्होंने की थी । आत्मनिर्भरता के साथ-साथ शिक्षा का केंद्र महेश्वर बने इसके लिए विद्वानों, धर्माचार्यों को बुलाकर संस्कृत पाठशाला प्रारंभ करने का कार्य भी उनके द्वारा हुआ। मल्हारराव के युद्ध अभियानों पर जाने के उपरांत महारानी अहिल्याबाई राज्य का संचालन भी कुशलता के साथ करती थीं। पत्राचार के माध्यम से मल्हार राव को अपने राज्य के समाचार भेजना एवं प्रत्युत्तर में राज्य संचालन के लिए सुझाव लेना यह उनकी नियमित प्रक्रिया थी । सेवा एवं रसद सामग्री का प्रबंध, कर वसूली आदि की व्यवस्था बड़ी निपुणता के साथ उन्होंने की थी । महारानी स्त्री होने के बाद भी न केवल राज्य संचालन में निपुण बल्कि एक कुशल योद्धा भी थीं। बचपन में ही सैन्य शिक्षा, घुड़सवारी, शस्त्र संचालन उन्होंने सीखा था । राघोवा के आक्रमण के समय अपने राज्य की रक्षा के लिए कूटनीति का परिचय देते हुए उन्होंने पुराने संबंधों के आधार पर सिंधिया, भोंसले, गायकवाड आदि का सहयोग माँगा । राघोवा को उचित दंड देने के लिए 500 महिलाओं की सैन्य टुकड़ी को प्रशिक्षित भी किया । राघोवा को उनके द्वारा लिखा पत्र आज भी उनकी कूटनीतिक दूरदर्शिता को प्रकट करता है, जिसमें उन्होंने लिखा कि आप मुझे अबला समझकर राज्य हड़पने के लिए यहां आए हैं लेकिन मेरी शक्ति आपको युद्ध क्षेत्र में ज्ञात होगी । मैं महिला सेना के साथ आपका मुकाबला करूंगी । यदि मैं युद्ध में पराजित हो गई तब मेरी हंसी और आपकी प्रशंसा कोई नहीं करेगा और यदि आप युद्ध में हार गए तो आप कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे । केवल राघोवा ही नहीं अपने राज्य की सीमाओं पर राजस्थान की ओर से मिलने वाली चुनौती का भी उन्होंने साहस के साथ सामना कर शत्रु को कुचलने का कार्य किया । सेना का संचालन, सैनिकों की चिकित्सा आदि भी उन्होंने कुशलता के साथ की । नाना फड़नवीस ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा था कि अब तक देवी अहिल्याबाई की धार्मिकता की प्रशंसा तो हम सुनते आए हैं मगर हम नहीं जानते थे कि वह बहादुर भी हैं अपने शत्रुओं के दांत खट्टे कर सकती हैं। महारानी अहिल्याबाई का शासन कठोर एवं न्यायप्रिय शासन था । उन्होंने जाति-पाति, ऊँच - नीच के भेदभाव से ऊपर उठकर चोरों के भय से जनता को मुक्ति प्रदान करने वाले नौजवान से अपनी पुत्री का विवाह किया । गरीब एवं कमजोर लोगों की सेवा में वह हमेशा तत्पर रहती थी। पति की मृत्यु के पश्चात् पति की संपत्ति पर पूर्ण अधिकार की व्यवस्था एवं स्त्री को दत्तक लेने का अधिकार देना यह उनके महिला सशक्तिकरण के उदाहरण हैं । उनके राज्य में रहने वाले भीलों (जनजाति) को अपराध मुक्त करने के लिए कृषि के औजार उपलब्ध कराकर सशक्त करने का कार्य उन्होंने किया। अपराध करने पर कठोर दंड एवं समस्याओं का त्वरित समाधान यह उनके शासन की विशेषता थी ।

कितने जायज हैं ईवीएम पर विपक्ष के सवाल

सुरेश हिंदुस्तानी

विपक्षी राजनीतिक दलों को ऐसा ही लगता है कि भाजपा के पास कोई जनाधार नहीं है, वे मात्र ईवीएम के सहारे ही जीतते हैं। जबकि विपक्ष के किसी राजनीतिक दल को किसी राज्य में सत्ता प्राप्त हो जाए तो फिर ईवीएम पर सवाल नहीं उठाए जाते। देश में प्राय: हर उस चुनाव के बाद विद्युतीय मतदान मशीन पर सवाल उठते रहे हैं, ज़ब किसी भी विपक्ष की सरकार नहीं बन पाती। इस बार भी लोकसभा चुनाव के बाद देर से ही सही, लेकिन ईवीएम पर सवाल उठने लगे हैं। हालांकि अभी स्वर इसलिए भी धीमे हैं, क्योंकि लोकसभा चुनाव में विपक्ष के राजनीतिक दलों ने अपनी ताकत बढ़ाकर एक मजबूत विपक्ष बनने का रास्ता तैयार कर लिया है। देश के राजनीतिक इतिहास में ऐसा दृश्य पहली बार दिख रहा है, ज़ब विपक्ष सरकार बनाने से दूर रहकर भी अपनी विजय का अहसास करा रहा है। इसके विपरीत सत्ता पाने वाले राजग इस बात की समीक्षा कर रहा है कि उसकी सीटें कम कैसे हो गईं। जबकि यह समीक्षा विपक्षी दलों को करना चाहिए। खैरज बात हो रही थी ईवीएम की। इस लोकसभा चुनाव से पूर्व भी भाजपा के नेतृत्व में दो बार केंद्र में सरकार बनी, तब भी विपक्ष का यही मानना था कि ईवीएम की गड़बड़ी के कारण ही भाजपा ने विजय प्राप्त की है। हालांकि इन दस वर्षों के दौरान कई बार ऐसे चुनाव परिणाम भी आए हैं, जिसमें भाजपा को हार का सामना करना पड़ा। लेकिन विसंगति यही है कि इसके बाद विपक्ष की ओर से ईवीएम पर कोई सवाल नहीं उठाए गए। ऐसी स्थिति में यही कहा जा सकता है कि विपक्ष की ओर से स्थिति देखकर ही सवाल उठाए जाते हैं। विपक्षी राजनीतिक दलों को ऐसा ही लगता है कि भाजपा के पास कोई जनाधार नहीं है, वे मात्र ईवीएम के सहारे ही जीतते हैं। जबकि विपक्ष के किसी राजनीतिक दल को किसी राज्य में सत्ता प्राप्त हो जाए तो फिर ईवीएम पर सवाल नहीं उठाए जाते। हम जानते हैं कि विपक्ष को केवल भाजपा की जीत से परहेज है, वे भाजपा की जीत को पचा नहीं पाते, जबकि दिल्ली और पंजाब में आम आदमी पार्टी को छप्पर फाड़ समर्थन मिला था, लेकिन तब ईवीएम पर कोई सवाल नहीं उठा। हमें स्मरण होगा कि सन 2014 के लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद विपक्षी दलों के अधिकतर नेताओं ने एक स्वर में ईवीएम पर सवाल खड़े किए थे। तब इन सवालों का जवाब देने के लिए चुनाव आयोग ने सारे राजनीतिक दलों को बुलाया था कि ईवीएम को कोई हैक करके

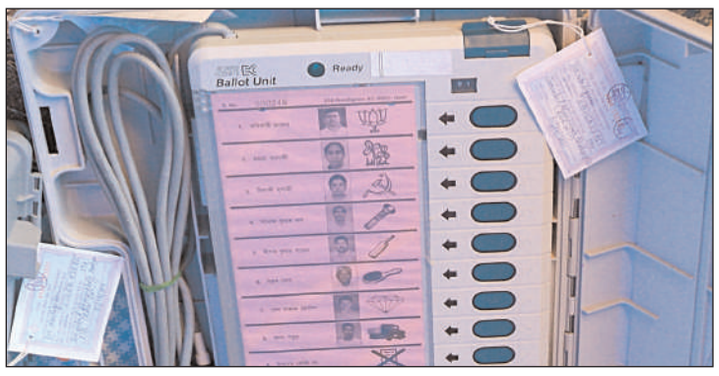

दिखाए। लेकिन उस समय ज्यादा विरोध करने वाले कोई भी राजनेता चुनाव आयोग के बुलावे पर नहीं पहुंचे। इसका तात्पर्य यही है कि विपक्ष के ईवीएम पर आरोप का कोई पुष्ट आधार नहीं है। इस बार भी केवल आशंका के आधार पर ईवीएम को निशाने पर लाने की कोशिश की जाने लगी है। चुनाव परिणाम के बाद इस बात की पूरी संभावना बन रही थी कि इस बार ईवीएम को आड़े हाथ लिया जाएगा। इसलिए चुनाव आयोग ने भी ईवीएम को लेकर उत्पन्न होने वाले भ्रम को दूर करने का प्रयास किया। लेकिन इतना होने के बाद भी यह भ्रम दूर नहीं हो सका और ईवीएम पर आरोप लगने शुरू हो गए हैं। यह विवाद कितनी दूर तक जाएगा, यह तो कहना मुश्किल है, लेकिन ज़ब धुंआ उठने लगा है तो आग भी कहीं न कहीं लगी ही होगी। अब विपक्ष के निशाने पर चुनाव आयोग और ईवीएम दोनों ही हैं। विपक्ष की ओर से यह कई बार कहा गया कि चुनाव आयोग केंद्र सरकार के संकेत पर कार्य करता है। वास्तविकता यह है कि चुनाव आयोग एक स्वायत्त संस्था है, जिस पर न तो किसी सरकार का कोई प्रभाव रहता है और न ही किसी राजनीतिक दल का। फिर भी चुनाव आयोग को क्यों विवाद में घसीटा जाता है। यहां यह भी बताना बहुत महत्वपूर्ण है कि अगर विदेश का कोई व्यक्ति या संस्था भारत के बारे में कोई सवाल उठाता है तो हमारे देश के कुछ लोग उस पर आँख बंद करके विश्वास कर लेते हैं, जबकि हमारे देश के संस्थान केवल सफाई देते रहते हैं। अभी हाल ही में एलन मास्क द्वारा यह कहकर सनसनी फैलाने का ही काम किया है कि ईवीएम हैक हो सकती है। एलन मास्क ने यह बयान क्यों दिया, यह तो वही जानें, लेकिन विदेश के लोगों द्वारा भारत के बारे में ऐसे विवादित बयान कई बार दिए जा चुके हैं, जिसको आधार बनाकर भारत की राजनीति को प्रभावित करने का प्रयास किया गया। पाकिस्तान की तरफसे तो मोदी सरकार को सत्ता से हटाने के लिए एक अभियान सा चलता दिखाई दिया। बेहतर यही होता कि विदेश के किसी भी व्यक्ति को सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों तरफसे आईना दिखाने का कार्य किया जाता। क्योंकि यह भारत के अंदरुनी मामले हैं, जिनका समाधान कोई विदेशी कभी नहीं निकाल सकता। ईवीएम पर सवाल उठाने से पहले यह सोचना होगा कि भारत एक बड़ा देश है। ईवीएम प्रणाली से समय की बचत तो होती ही है, साथ ही व्यय में भी कमी आती है। ईवीएम को लेकर जो सवाल अभी उठ रहे हैं, वे सवाल वास्तव में उस समय उठने चाहिए थे, ज़ब ईवीएम को भारत में लाया गया। उस समय की कांग्रेस की सरकार इसे लेकर आई। ऐसा लगता है कि उस समय यह ठीक थी, लेकिन बाद में उसी को बुराई के रूप में देखा जाने लगा।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, शुक्रवार 23 अगस्त 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

सुखी जीवन जीना है तो चिंतन करें : आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज

कोल्हापूर (विश्व परिवार)। आचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी महाराज ने धर्म- सभा में सम्बोधन करते हुए अपने अमृत वचनों से कहा कि- जिसे शीघ्र चिता पर जलना है वह चिंता करे और जिसे सुखी जीवन जीना है वह चिंतन करे। चिंतन आत्मोन्नति का प्रबल साधन है। विचारशील मानव सर्वत्र सफलता को प्राप्त करता है। चिंता चिता के समान दुखदायी होती है।

चिंता करने से शारीरिक बल, प्रज्ञा, बुद्धि, ज्ञान नष्ट होता है। चिंतन से सर्व समस्याएं सुलझ जाती है और विकास की राहें प्रशस्त होती हैं। जैसी चिंतन की धारा होती है, वैसा ही जीवन का निर्माण होता है। विचारों पर ही आचार निर्मित होता है। संयोग-वियोगों में व्यक्ति चिंतित होता है। अच्छे व्यक्तिओं के वियोग होने पर, सहयोगियों के वियोग पर और शत्रुओं के संयोग पर हम चिंता के गहरे गड्ढे में गिरते चले जाते हैं। चिंता करने वाले की खुशी विलीन हो जाती है, मुख काला होने लगता है, आंखें धंसने लगती हैं, शरीर सूखने लगता है, भोजन अरुचिकर लगता है, विपरीत सोचते-सोचते प्राण निकल जाते हैं। सर्व रोगों की मूल जड़ चिंता है। विचारों से ही मानव की पहचान होती है। विचारों के अनुसार ही व्यक्तित्व एवं कृतित्व निर्मित होता है। विचार हमारे कुल, परंपराओं और संस्कृति के घोतक होते हैं। व्यक्ति विचारों से ही उठता है, विचारों से ही गिरता है। विचारों से ही विकास होता है, विचारों से ही ह्रास होता है।विचारशील मानव का भोजन शुद्ध-शाकाहार ही होता है। शुद्ध भोजन ही शुद्ध विचारों को जन्म देता है। वर्तमान के पवित्र विचार भविष्य में सुख-शांति आनंद के आधार पर बनते हैं। जैसा बीज होता है, वैसा ही फल लगता है। जैसी मति होगी, वैसी गति होगी। सद्गति चाहिए तो सद् विचार करो।

भावों के अनुसार कर्म का बंध होता है। जैसा बंध होता है ठीक उसी तरह कर्मों का उदय होता है। सत्ता के उदय से सुख तथा असत्ता के उदय से दुख होता है। जीवन में सुख व दुख दो पहलू होते हैं, यानी कभी सुख तो कभी दुख। अशुभ उदय के काल में जीवन रूद्रन, दुखित व कष्ट प्राप्त करता है।

दिगंबराचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज श्री ने कहा कि जीव स्वयं ही पाप करता है तथा स्वयं ही कष्टों को भोगता है। आंखों की पलक उठाने में भी शक्ति लगानी पड़ती है और इसका एहसास वृद्धावस्था में होता है। कभी पहलवानी करने वाले भी शक्तिक्षीण होने पर एक कदम उठा भी नहीं पाते हैं। जीव स्वयं बंधता है तथा स्वयं मुक्त भी होता है। जब जीव के भाव, भाषा व कार्य बुरे होते हैं तो समझा जा सकता है कि उसके साथ बुरा होना है।

प्रज्ञावंत मनुष्य को संभलकर जीवंत जीवन जीना चाहिए। वहीं कहा कि जीवन में आत्म जागृति आवश्यक है। पलभर की भी असावधानी नहीं करनी चाहिए क्योंकि क्षण भर का भी प्रमाद व आलस जिदगी भर का भी दुख दे सकता है। जिस तरह एक बीज वृक्ष के रूप में विस्तृत हो जाता है। ठीक उसी तरह एक अशुभ भाव व पाप जीवन को पतित कर देता है। सुखद जीवन के लिए उत्साह, उमंग के साथ जीवंत जीवन जीना चाहिए। निराश होकर जीने वाला व्यक्ति कभी सफल इंसान नहीं हो सकता।

-अभिषेक अशोक पाटील

जिस व्यक्ति को अपनी आत्मा से सच्चा श्रद्धान होता है, उसको किसी से भय नहीं होता : मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज

विदिशा (विश्व परिवार)। मैं अजर, अमर, अविनाशी आत्म तत्व, शुद्ध, वुद्ध निरंजन आत्मा हूं, मैं ज्ञाता, दृष्टा आत्मा हूं यह भावना मात्र शब्दों से नहीं बल्कि इसकी अनूभूति अंदर से आना चाहिए, तभी वह सच्चा सम्यक् दृष्टि है, जिस व्यक्ति को अपनी आत्मा से सच्चा श्रद्धान होता है, उसको किसी से भय नहीं होता उसकी आत्मा में असीम पराक्रम होता है, उपरोक्त उद्गार शंकासमाधान प्रणेता मुनि श्री प्रमाण सागर महाराज ने सोलहकारण भावना प्रवचन माला की शुरुआत करते हुये दर्शन विशुद्धि भावना पर अपने उदगार प्रकट किये। मुनिश्री ने कहा कि सब प्रकार की अनुकूलता में भेद विज्ञान की बात करना बहूत सरल है, लेकिन अनूकूलता में आपका भेद विज्ञान बना रहे तो समझना आप सच्चे सम्यकदृष्टि है। मुनि श्री ने श्रद्धा, अश्रद्धा, अंधश्रद्धा, विशुद्धश्रद्धा का वर्णन करते हुये कहा कि जिसके भीतर देव गुरू और धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा होती है वह सप्त भयों से रहित होता है वह अंधविश्वास तथा आडंबरों को कभी मान्यता नहीं देता बाहर से देव गुरु धर्म के प्रति समर्पण तथा अंदर से अपनी

आत्मा के प्रति अटूट श्रद्धान यही सच्चे सम्यक् दृष्टि के लक्षण है। वह मानता है कि एक मात्र अजर अमर अविनाशी शास्वत आत्मा है, मुनि श्री ने कहा भगवान को बाहर मत ढूड़ो भगवान तो तुम्हारी आत्मा में विराजमान है जो अपनी आत्मा को जान लेता है वह सब कुछ जान लेता है तथा बाहरी पदार्थों से बाहरी रिस्ते नातों से उसका मोह नष्ट हो जाता है। उन्होंने कहा कि मात्र सम्यकदर्शन, सम्यकदर्शन की बात करने से सम्यकदर्शन नहीं होगा सोहं सोहं शुद्धोहम शुद्धोहम की भावना भाने के साथ आत्मा और शरीर के भेद विज्ञान की अनूभूति करने से सम्यक् दर्शन होगा। में शुद्ध आत्मा हुं में विशुद्ध आत्मा हूं का लगातार चिंतवन करने से आत्मानुभूति होगी उन्होंने कहा कि बाहर से भले ही हम आपके गुरु नजर आ रहे है लेकिन आत्मा ही आत्मा का गुरु होता है, मुनि श्री ने कहा मृत्यु से कभी भी किसी भयभीत होंने की जरुरत नहीं, कुछ लोगों की धर्म के प्रति तभी तक श्रद्धा रहती है जब तक उनका स्वार्थ रहता है स्वार्थ सिद्ध हो गया तो धर्म के प्रति श्रद्धा बनी रही और स्वार्थ सिद्ध नहीं हो पाया तो काहे का धर्म और काहे के गुरु ऐसे लोगों की श्रद्धा कब अश्रद्धा में परिवर्तित हो जाये पता ही नहीं लगता। धर्म प्रभावना समिति के मीडिया प्रभारी राहुल जैन एवं प्रवक्ता अविनाश जैन ने उपरोक्त जानकारी देते हुये बताया सांयकालीन शंकासमाधान के सत्र में इंदौर महानगर के अधिवक्ता तथा न्यायाधीश उपस्थित रहे उन्होंने मुनिसंघ का आशीष लिया एवं अपनी शंकाओं का समाधान किया। इस अवसर पर धर्मप्रभावना समिति के सभी पदाधिकारियों ने उनका अभिनंदन कर स्वागत किया। **-अविनाश जैन**

आरके पुरम त्रिकाल चौबीसी जैन मंदिर में होगी 13 दीक्षार्थी दीदीयो की गोद भराई

कोटा (विश्व परिवार)। आर के पुरम स्थित श्री 1008 मुनिसुव्रत नाथ दिगंबर जैन त्रिकाल चौबीसी जैन मंदिर में परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में दीक्षा लेने वाली विशु दीदी सहित 13 दीक्षार्थी दीदीयों की गौद भराई का कार्यक्रम भव्यता के साथ दिनांक 23 अगस्त को प्रात: काल 8 बजे किया जाएगा।मंदिर समिति के अध्यक्ष अंकित जैन महामंत्री अनुज गोधा कोषाध्यक्ष ज्ञान चंद जैन ने बताया कि जीवन है पानी की बूँद महाकाव्य के जनक, जिनागम पंथ प्रवर्तक, आदर्श महाकवि, भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज के द्वारा देश की राजधानी दिल्ली में दिनांक 15 नवंबर 24 को दीक्षाये प्रदान की जायेगी। मंदिर समिति के प्रचार प्रसार मंत्री पारस जैन पार्श्वमणि ने बताया कि इस अवसर पर सकल दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष विमल जैन नांता महामंत्री विनोद जैन टोरडी, जे के जैन, प्रकाश बज, रूप चंद जैन, महावीर जैन प्रकाश जैन, लोकेश जैन, पदम जैन, रोहित जैन, अशोक जैन, प्रेमचंद सोगानी, विमल जैन, दीपक जैन आदि सहित सैकडो श्रद्धालुओं की उपस्थिति रहेगी। उक्त समस्त जानकारी मंदिर समिति के प्रचार प्रसार मंत्री पारस जैन पार्श्वमणि ने प्रदान की। **-पारस जैन पार्श्वमणि**

चौथे वेस्ट जोन कराटे प्रतियोगिता में अर्चित श्रीवास्तव को रजत पदक

रायपुर (विश्व परिवार)। शहर के अर्चित श्रीवास्तव ने चौथे वेस्ट जोन कराटे प्रतियोगिता में रजत पदक हासिल किया है। इंदौर में 16-18 अगस्त तक आयोजित इस प्रतियोगिता में अर्चित ने सब जुनियर ग्रुप में 20 किलोग्राम वर्ग में कुमेटी फाइट स्पर्धा में रजत पदक हासिल किया। स्पर्धा में सब जुनियर, जुनियर, कैडेट, अंडर 21, सीनियर वर्गों में महिला एवं पुरूषों के फाइट एवं काता की अलग- अलग प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान और गोवा के एक हजार से अधिक खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी में प्रबंधक विकास श्रीवास्तव के पुत्र अर्चित दूसरी कक्षा के छात्र हैं और कराटे का नियमित प्रशिक्षण लेते हैं।

जैन गौरव विक्रमादित्य वीर

विक्रमादित्य- (महेन्द्रादित्य गर्द भिल्ल) ई. पू. 74 में मालवगण का अध्यक्ष और उज्जयिनी का स्वामी था। यह नगर पूर्व कॉल से ही जैन धर्म से संबंधित रहता आया था। और उस काल में तो मध्य भारत में विशेषकर आचार्य स्थूलिभद्र एवं सुहस्ति की पर परा के जैनों का प्रधान केन्द्र था। जैन साधुओं और साध्वियों का यहां स्वच्छन्द विहार होता था। कालक द्वितीय उस समय के प्रसिद्ध जैनाचार्य (कालाचार्य) थे जो पूर्व अवस्था में एक राज कुमार थे उनकी बहन राजकुमारी सरस्वती ी जैन साध्वी थी। वह अत्यंत रूपवान थी। गर्द भिल्ल उसे देखते ही उसके रूप पर बेतरह आसक्त हो गया और उसने धर्म की मर्यादा को भुलाकर उक्त साध्वी का अपहरण कर अपने महल में ले आया। समाचार पाते ही कालकाचार्य ने राजा को बहुत समझाया अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों से भी दबाव डलवाया, किन्तु स्वेच्छाचारी से राज्यकुर्लोत्पन्न क्षत्रियोचित संस्कार के शाहियों के पास पहुंचा और उन्हें ससैन्य सहायता को प्रेरित किया, आस-पास के राजाओं से सहायता प्राप्त करता हुआ ई. पूर्व 66 में उज्जयिनी पर आक्रमण किया, ल बे समय तक संघर्ष किया गर्द भिल्ल को बन्दी बना लिया साध्वी सरस्वती

की उद्धार हुआ। गर्द भिल्ल की याचना पर प्राणदण्ड नहीं दिया। महेन्द्रादित्य गर्द भिल्ल का सुयोग्य एवं तेजस्वी पुत्रवीर विक्रमादित्य तो इस स्थिति से अत्यंत असंतुष्ठ था। मालवा गणराज्य को सुगठित किया और ई. पू. 57 में शकों को उज्जयिनी प्रदेश से निकाल बाहर किया। वीर विक्रमादित्य को अपना गणराजा घोषित किया। उन्हें शकारि की उपाधि प्रदान की, और उक्त विजय वर्ष को बाद में सब विक्रम संवत के रूप में जानते हैं। अपनी विजय के उपलक्ष्य में सिक्के भी ढ़ले पर सालवानां जय: और मालगणराज्य जय शब्द अंकित किये। विक्रमादित्य का कुलधर्म जैन था, राज्यधर्म भी जैन था, मानव गुणों और मालदेश के प्रजाजनों में ी इस धर्म की प्रवृत्ति थी। जैन अनुश्रुतियों के अनुसार सम्राट ने स्वदेश को सुखी, समृद्ध एवं नैतिक बनाया। मालवा पर लगभग सौ वर्ष राज्य किया बताया जाता है। पूर्ववर्त चंद्रगुप्त मौर्य एवं खारवेल जैसे महान जैन सम्राटों की पर परा में देश की विदेशियों को आक्रमण से मुक्त करने में यह महान जैसे सम्राटों की पर परा में देश को विदेशियों को आक्रमण से मुक्त करने में यह महान जैन सम्राट विक्रमादित्य भी अविस्मरणीय है।

पद मिले और वैसी योग्यता न रहे, तो धृतराष्ट्र बनते हैं...

हैदराबाद (विश्व परिवार)। और योग्यता हो और पद न मिले, तो कर्ण बनते हैं..! सव्वथ्य सुन्दरो अप्पा। सभी जीवों के अन्दर भगवान बनने की योग्यता है, क्षमता है, , पर दर दर की ठोकरे खा रहा है-भगवान बनने की योग्यता रखने वाला इन्सान।

तुम बीज हो-वृक्ष बन सकते हो।
बूंद हो-सागर बन सकते हो।
मिट्टी हो-गागर बन सकते हो।

भारत की हर जमीन के नीचे मीठे पानी के श्रोत बह रहे हैं, , बस खोदने की देरी है। हाँ यह सच है कि कहीं 10 फिट पर, तो कहीं 25 फिट पर, तो कहीं 50-100 फिट पर, तो कहीं 500-1000 फिट पर पानी भरा है, , बस धैर्य पूर्वक खोदने की आवश्यकता है। भगवान खोजने से नहीं, बल्कि भीतर खोदने से मिलता है। इसलिए भीतर खोदो-24 घन्टे में थोड़ा समय निकालो, भीतर खोदने के लिए।

शुरू शुरू में थोड़ी परेशानी हो-तो होने देना, , उदासी लगे-तो लगने देना, उबासी आये-तो आने देना। लेकिन एक घड़ी 24 घन्टे में चुपचाप बैठ जाना। ना कुछ करो, ना कुछ गुनो, ना कुछ बोलो, ना कुछ सुनो, ना कुछ कहना, ना कुछ मांगना, ना मन्त्र पढ़ना, ना कोई जाप करना, ना कोई प्रार्थना, ना चिन्तन, ना चिन्ता, ना कोई विचार। यह सब निरपेक्ष भाव से देखते रहना, जानते रहना, बिना किसी लगाव के सिर्फ देखते, जानते रहना। जैसे-तेल की बूंद अथाह पानी में तैरती है, , पर सबसे निर्लिप्त है। ना अच्छा, ना बुरा विचार, , यदि

विचार आये तो गुजरते रहने देना। आये तो आये, ना आए तो ना आए। ना उत्सुकता आने की, ना जाने का गम। तब आप देखना — धीरे धीरे एक दिन वह घड़ी आएगी, कि विचार विदा हो गये और एकाकीपन, यानि भीतर का सन्नाटा रह गया। भीतर जब एकाकीपन का सन्नाटा आता है, तो बिजली का धक्का जैसा महसूस होता है और रोम-रोम पुलकित हो जाता है। क्योंकि तुम्हारा सम्बन्ध भीड़ भाड़ से अलग होने लगा है, , झटका तो भारी लगेगा। भीतर खोदने का इससे अच्छा ज़रिया, और क्या हो सकता है। **-नरेन्द्र जैन अजमेरा**

शिष्य और शीशी को डॉट आवश्यक : मुनिश्री पद्म सागर जी महाराज

जबलपुर (विश्व परिवार)। जबलपुर संगम कॉलोनी श्री 1008 चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर शिष्य और शीशी को डॉट अवश्य लगाना चाहिए। यदि शीशी में डॉट न हो तो माल सुरक्षित नहीं रह सकता और शिष्य को डांटो नही तो शिष्य सुरक्षित नहीं रह सकता मुनि श्री ने आज अपनी विद्या धारा प्रवचन माला के दौरान सभी उपस्थित समुदाय को संबोधित करते हुए कहा आत्मानुशासन ही परम शासन है, आत्मानुशासन से किसी को कष्ट नहीं होता लेकिन दूसरे पर शासन जमाने पर दूसरे को कष्ट अवश्य पहुँचता है।और किसी दूसरे पर शासन करने का भाव ही हिंसा है। इसीलिए भगवान् महावीर ने किसी पर शासन नहीं चलाया, वे आत्मानुशासन में लगे रहे अत: नियंत्रण आस्था के ऊपर आधारित रहता है। मुनि श्री ने सभी को आत्मानुशासित रहने की प्रेरणा दी और बताया कैसे विद्यासागर जी

महाराज अंतिम समय तक आत्मानु शासित थे तभी जब अंतिम समय उनकी सेवा करने का प्रयत्न किया गया उन्होंने उसे भी स्वीकार ना करते हुए स्व अनुशासन का नया कीर्तिमान स्थापित किया महाराज श्री ने बताया की स्व अनुशासित होने का मंगल अवसर विद्या वर्धनी शिविर के रूप में आपके बीच पर्युषण पर्व में आने वाला है जिसमें आपको प्रैक्टिकल सेल्फ लर्निंग क्लासेज भी दी जाएंगी जिसके रजिस्ट्रेशन ऑनलाइन वा ऑफलाइन प्रारंभ है प्रतिदिन संगम कॉलोनी में गुरु संस्मरण की प्रवचन श्रृंखला प्रारंभ है। **-ब्र. आलेंद्र जी**

जीवन में पाप का विस्तार घटाते रहो धर्म का विस्तार होगा : मुनिश्री प्रियदर्शी विजय जी

रायपुर (विश्व परिवार)। विवेकानंद नगर संभवनाथ जैन मंदिर में चातुर्मासिक प्रवचनमाला जारी है। गुरुवार को तपस्वी मुनिश्री प्रियदर्शी विजयजी म.सा. ने पाप से बचने की बात कही। मुनिश्री ने जीवन में पाप का विस्तार घटाने, पाप का वॉल्यूम घटाने, पाप की फ्रीक्वेंसी घटाने और पाप की वैरायटी घटाने के चार स्टेज समझाए।

मुनिश्री ने पाप भीरूता के बारे में आगे बताते हुए कहा कि जीवन में चार स्टेज पर जाकर आप पाप को घटा सकते हो। (1) पाप के विस्तार को घटाओ अर्थात जो सामाजिक दृष्टि में पाप नहीं गिना जाता लेकिन धार्मिक दृष्टि में पाप है, उसे मित्र वर्ग आदि के साथ सेवन करने में क्षोभ भले ही ना हो परंतु पारिवारिक स्तर पर या व्यक्तिगत स्तर पर उसका जीवन में त्याग करो, क्योंकि जिस कार्य को समूह में सामाजिक स्तर पर करना पड़ रहा है उसे अपने व्यक्तिगत जीवन में तिलांजलि दो। (2) पाप का वॉल्यूम घटाओ-जिस तरह व्यक्ति के सिर पर उधारी चुकाने का भार हमेशा रहता है और किस तरह से उसे कम किया जाए ऐसा व्यक्ति हमेशा सोचता रहता है बस उसी तरह जीवन में जो भी छोटे-बड़े पाप हैं उन पापों के लिए हमेशा मन मे यही विचार होना चाहिए, कैसे वह कम किए जाएं ,ऐसा विचार करके पाप का वॉल्यूम घटाते रहना। (3) पाप की फ्रीक्वेंसी कम करो- जो जीवन में व्यसन सिगरेट, शराब, गुटखा आदि के रूप में पाप है जो आपके पीछे लगे हैं ऐसे उन पापों के पीछे आप मत भागो और जो पीछे लगे हैं उनके भी क्वांटिटी मिनिमाइज करते जाओ। (4) पाप की वैरायटी को कम करो- उसके लिए आपको पाप के रूप में देखो और उसमें इंटरेस्ट काम करते जाओ क्योंकि पाप तो पाप रूप है लेकिन पाप का रस वह महापाप रूप है।

अंत में मुनिश्री ने बताया कि धर्म के साथ हमारा संबंध किस तरह का होना चाहिए। (1) संबंध आहार जैसा हो तो मात्र भूख लगने पर जैसे भोजन ग्रहण किया जाता है उसी तरह धर्म का सेवन भी जीवन में जरूरत के स्थान पर रहेगा। (2) संबंध दवा जैसा हो तो दवा जिस तरह मात्र बीमारी में ली जाती है इस तरह धर्म भी अत्यंत कम समय के लिए जीवन में रहेगा। (3) संबंध हवा के जैसे हो तो हवा के बिना जैसे कोई भी प्राणी जीवित नहीं रहता इस तरह धर्म के बिना भी नहीं रह सके, ऐसा धर्म का स्थान हमारे जीवन में होना चाहिए। **-रविशंकर शर्मा**

घटयात्रा जूलूस के साथ हुआ सिद्धचक्र महामंडल विधान का आगाज

ध्वजारोहण कर किया महोत्सव के पात्रों का चयन, सिद्धो की आराधना का सुनहरा अवसर इसका लाभ लें

अशोक नगर (विश्व परिवार)। संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महा मुनिराज की अनुकंपा एवं आचार्यश्री समयसागर जी महामुनीराज परमपूज्य निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज के निर्देशन व बाल ब्रह्मचारी प्रदीप भैया जी एवं नरेश भैया जी के सानिध्य में पछाड़ी खेड़ा स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर श्री 1008 सिद्ध चक्र महामंडल विधान एवं विश्वशांतिमहायज्ञ का भव्य घटयात्रा जूलूस का आयोजन श्री दिगम्बर जैन पंचायत कमेटी के तत्वावधान पार्श्वनाथ ट्रस्ट कमेटी द्वारा किया गया जिसमें माता वहने अपने सिर पर मंगल कलश लेकर जल लेने निकाली घटयात्रा जूलूस पार्श्वनाथ मंदिर से रवाना होकर प्रमुख मार्गों से होते हुए पुन: पार्श्वनाथ मंदिर प्रांगण में आकर ध्वजारोहण समारोह में बदल गया।

22 से 29 तक चलेगी भगवान की महा आराधना : उक्त आश्य की जानकारी देते हुए जैन समाज के मंत्री विजय धुर्रा ने बताया कि उन्तीस तारीख तक चलने वाली महा आराधना में ध्वजारोहण करने का सौभाग्य सुरेश चंद्र राजीव कुमार चन्देरी परिवार को मिला जहां ब्र प्रदीप भ इया नरेश भ इया के मंत्रोच्चार के वीच राजीव कुमार मौसम कुमार संस्कार टेंडर्स द्वारा

ध्वजारोहण किया गया तदउपरांत मंडल शुद्धि पडंप शुद्धि के साथ ही पात्रों का चयन किया गया इस दौरान प्रतिष्ठा चार्य प्रदीप भ इया ने कहा कि आज आपको सिद्धो की महा आराधना करने का स्वर्णिम अवसर मिला रहा है कल से यहां बैठने को स्थान नहीं मिलेगा सिद्धो की ऐसी महिमा है कि इनकी आराधना सच्चे मन से करने वालो के रोग शोकं दु:ख दारुण सब दुर हो जाते हैं।

महोत्सव के पात्रों का चयन कर दिये राजसी वस्त्र : सिद्धचक्र महा मंडल विधान में मैन सुन्दरी श्री पाल राजा वनने का सौभाग्य सुरेश चंद्र सुनील कुमार संजीव कुमार रिक्कू ओडेर परिवार को मिला इसके साथ ही सौ धर्म इन्द्र सुभाष कुमार राहुल कुमार पिपरई धनकुबेर संजीव कुमार मनीष कुमार महावीर टी महा यज्ञ नायक इंजिनियर अनिल कुमार जैन इंसान इन्द्र विनोद कुमार लोकेश कुमार अंकित सन्तूरा सनत इन्द्र कमलेश कुमार सचिन कुमार एन एस महेंद्र इन्द्र प्रमोद कुमार प्रसुन कुमार मंगलदीप ब्रह्म इन्द्र एस के जैन को वनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिन्हें समाज अध्यक्ष राकेश कासंल महामंत्री राकेश अमरोद मंत्री शैलेन्द्र श्रागर मन्दिर संयोजक मनोज रत्नौद अंकित सन्तूरा जैन समाज उपाध्यक्ष अजित वरोदिया प्रदीप तारई कोषाध्यक्ष सुनीलअखाई मंत्री शैलेन्द्र श्रागर संजीव भारिल्ल मिडिया प्रभारी अरविंद कचनार एडीटर संजय के टी थूवोनजी कमेटी अध्यक्ष अशोक जैन टींगू महामंत्री विपिन सिंघई हेमंत टडैया दारा वस्त्र आभूषण राजसी पोषक सहित हार मुकुट से सम्मानित किया गया।

सभी भक्तों को अपना मन बनाकर रखना है। इस दौरान जैन समाज मंत्री शैलेन्द्र श्रागर ने कहा कि आज से ही सभी भक्तों को अपना मन बनाकर रखना है भगवान जिनेन्द्र देव की इस महा आराधना में घर का एक ना एक व्यक्ति मंडल पर श्री फल भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त करें और अपने अपने घर विधान का गंधोदक अवश्य लेकर जाये। इस दौरान राजेन्द्र कुमार राहुल कुमार अथाईखेडा बालचंद सुरेश चंद्र सुरेश चंद्र नीरज कुमार बाबूलाल मनीष कुमार संजय चौधरी सहित अन्य भक्तों को पात्र वनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ इस दौरान हेमंत टडैया संजीव रिक्कू ओडेर देवेन्द्र भारिल्ल अनिल जैन विनोद भिरिल्य नरेश जैन महावीर तरावली संजीव महावीर टी सहित अन्य प्रमुख जन उपस्थित थे। **-विजय धुर्रा**

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर शुक्रवार 23 अगस्त 2024

संक्षिप्त समाचार

गांजा बेचने वाले आरोपी को 5 वर्ष का कठोर कारावास

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले के अर्जुनी थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम सांकरा में अवैध रूप से गांजा बेचते पाए जाने पर आरोपी ढावल राम साहू के विरुद्ध थाना अर्जुनी द्वारा चालान पेश किया गया था। जिसमें 20 अगस्त को विशेष न्यायालय एनडीपीएस एक्ट ने फैसला देते हुए 5 वर्ष का कठोर कारावास और 50 हजार रूपये के अर्थदंड की सजा सुनाई है। मिली जानकारी के अनुसार 27 दिसंबर 2023 को धमतरी पुलिस थाना अर्जुनी को मुखबिर से सूचना मिली थी कि सांकरा के पास अवैध रूप से गांजा बेचा जा रहा है। सूचना पर थाना प्रभारी अर्जुनी ने गवाहों के साथ सांकरा निवासी ढावल राम साहू के घर छापेमारी की। इस कार्यवाही में पुलिस को ढावल राम के घर से 10 किलो 432 ग्राम गांजा मिला। जिसपर थाना अर्जुनी में एनडीपीएस एक्ट की धारा 20 (ङ)(द्वद्व) (ङ) के तहत अपराध कायम किया गया था। थाना प्रभारी निरी.राजेश मरई ने विवेचना कर वैधानिक कार्यवाही करते हुए सम्पूर्ण साक्ष्य संकलन,गवाहों एवं अन्य तथ्यों का समावेश कर न्यायालय में चालान पेश किया गया था। जिसको इस मामले में विशेष न्यायालय एनडीपीएस एक्ट के यायाधीश के.एल. चरयाणी ने 20 अगस्त को इस मामले में फैसला सुनाया। कोर्ट ने ढावल राम साहू को 5 वर्ष कठोर कारावास और 50000 रुपए अर्थदंड की सजा दी है। अर्थ दंड नहीं पटने पर1 वर्ष का अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा।

डबरी में डूबने से दो मासूमों की मौत

बीजापुर(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में एक दर्दनाक हादसा हुआ है. दुगोली गांव में खेलते-खेलते डबरी में डूबने से दो मासूम बच्चियों की मौत हो गई है. घटना से पूरे गांव में मातम पसर गया है. घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस मर्ग कायम कर आगे की कार्रवाई में जुट गई है. जानकारी के अनुसार, नैमेड थाना क्षेत्र के दुगोली गांव के बीच पारा में निवासरत तेलम परिवार हर दिन की तरह मंगलवार के दिन खेत में काम करने गया हुआ था. परिजनों के साथ दो मासूम बच्चियां भी खेत में गई हुई थी. इस दौरान शाम को खेत में खेलते-खेलते डबरी में गिरने से दोनों मासूमों की डूबने से मौत हो गई. एक बच्ची का नाम रंजना तेलम और दूसरी बच्ची का नाम पदमा तेलम बताया जा रहा है. घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस ने दोनों बच्चों का पंचनामा तैयार कर, पोस्टमार्टम करवा कर शव परिजनों को सौंपा दिया है.

ठोस रणनीति तैयार कर सभी विभाग एकजुट होकर काम करें : कलेक्टर

कोंडागांव(विश्व परिवार)। कलेक्टर कुणाल दुदावत की अध्यक्षता में मंगलवार को फ्लोरोसिस रोकथाम के लिए महत्वपूर्ण अंतर्विभागीय समन्वय बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में शिक्षा विभाग, महिला व बाल विकास, लोक स्वास्थ्य एवं यांत्रिकी विभाग, पंचायत एवं ग्रामीण विकास और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक का मुख्य उद्देश्य जिले में फ्लोरोसिस के प्रभाव को कम करने और इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए ठोस रणनीति तैयार करना था। फ्लोरोसिस एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है जो फ्लोराइड की अधिक मात्रा के सेवन से होती है। यह समस्या आमतौर पर उन क्षेत्रों में होती है जहां पीने के पानी में फ्लोराइड की मात्रा सामान्य से अधिक होती है। फ्लोराइड एक रासायनिक तत्व है, जो स्वाभाविक रूप से जल स्रोतों में पाया जाता है। जब इसके स्तर में अत्यधिक वृद्धि होती है, तो यह दांतों और हड्डियों में फ्लोरोसिस नामक रोग का कारण बनता है। इस बीमारी से दांतों और हड्डियों में विकृति, दर्द, और हड्डियों के कमजोर होने जैसी समस्याएं उत्पन्न होती है।बैठक के दौरान कलेक्टर कुणाल दुदावत ने जिले में फ्लोरोसिस से प्रभावित गांवों की फ्लोराइड रिमूवल प्लांट को दुरुस्त करने के निर्देश दिए। साथ ही सभी संबंधित विभागों को एकजुट होकर इस समस्या का समाधान निकालने पर जोर दिया। लोक स्वास्थ्य एवं यांत्रिकी विभाग को उन सभी स्थानों पर फ्लोराइड रिमूवल प्लांट की नियमित जांच करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही शिक्षा और महिला एवं बाल विकास विभाग को पोषणयुक्त भोजन उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए, ताकि बच्चों और गर्भवती महिलाओं को फ्लोराइड के प्रभाव से बचाया जा सके। पोषणयुक्त भोजन शरीर में फ्लोराइड के अवशोषण को कम करने में सहायक होता है। विशेष रूप से कैल्शियम, मैग्नीशियम और विटामिन सी से भरपूर भोजन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए चूंकि ये पोषक तत्व फ्लोराइड के प्रभाव को कम करने में मददगार होते हैं। स्वास्थ्य विभाग को फ्लोरोसिस की स्क्रीनिंग गतिविधियों को और भी तेज करने के निर्देश दिए गए। जिससे पहले से चल रही स्क्रीनिंग प्रक्रिया को और भी व्यापक और प्रभावी बनाया जा सके। स्वास्थ्य विभाग को यह सुनिश्चित करने के लिए कहा गया कि प्रभावित व्यक्तियों को उचित चिकित्सा सहायता और परामर्श मिले।

नियद नेल्लानार योजनांतर्गत स्वीकृत कार्यों को प्राथमिकता से करें - कलेक्टर

बिना सूचना के अनुपस्थित होने पर कारण बताओं नोटिस जारी करने दिए निर्देश

सुकमा(विश्व परिवार)। बुधवार को कलेक्टर श्री हरिस एस. ने जिला कार्यालय के सभाकक्ष में आयोजित समय-सीमा की बैठक में नियद नेल्लानार योजना एवं विभागीय कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने योजनांतर्गत चिन्हांकित ग्रामों में शासन के मंशानुरूप प्राथमिकता से कार्य करने को कहा। उन्होंने नियद नेल्लानार योजना के ग्रामों में स्वास्थ्य विभाग द्वारा मंशानुरूप कार्य नही होने पर कड़ी नाराजगी जाहिर की और वेतन रोकने के निर्देश दिए। साथ ही लोगों को मॉबलाइज कर आयुष्मान कार्ड बनाने, टीबी स्क्रीनिंग, सिकलसेल एवं एनीमिया स्क्रीनिंग , टीकाकरण की दिशा में शत-प्रतिशत लाभान्वित करने जोर दिया। बैठक में उज्ज्वला योजना, आधार कार्ड, पेंशन भुगतान, लर्निंग लाइसेंस, राशन कार्ड सहित हितग्राहियों का बैंक में खाता खोलना एवं बैंक सुविधा के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्रीमती नम्रता जैन सहित जिला स्तरीय विभागीय अधिकारी कर्मचारीगण उपस्थित थे। कलेक्टर श्री हरिस एस. ने नियद नेल्लानार योजना क्षेत्र के लोगों को स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, शिक्षा, खाद्यान्न, पेयजल सहित वहां के किसानों को किसान सम्मान निधि एवं किसान क्रेडिट कार्ड की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने जिले में चल रहे संपूर्णता अभियान की विस्तार से समीक्षा कर अभियान के तहत की जा रही कार्यक्रमों को पोर्टल में नियमित रूप से एंट्री करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने पीडीएस भंडारण कर नियमित रूप से ग्रामीणों को समय पर राशन वितरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने योजना क्षेत्र के सभी गांवों के लोगों को राशनकार्ड उपलब्ध कराने एवं प्रत्येक राशनकार्ड धारक को खाद्यान्न सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। जिले में पूर्ण हो चुके स्कूल भवनों को शीघ्र ही उपयोग में लाने को कहा और युक्तियुक्तकरण को लेकर आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में जगरगुण्डा एवं झापरा के लिए नवीन धान खरीदी केंद्र हेतु प्रस्ताव भेजने को कहा। कलेक्टर ने नियद नेल्लानार योजना के तहत विकासखण्ड कोन्टा के परिया कैंप एवं आश्रित ग्राम परिया, सामसट्टी, बोरगुड़ा, बगडेगुड़ा आयुष्मान कार्ड से वंचित हितग्राहियों का शत-प्रतिशत आयुष्मान कार्ड बनाने, नवीन आधार कार्ड एवं संशोधन तथा बैंक खाता खोले जाने हेतु 22 अगस्त से 24 अगस्त 2024 ग्राम पंचायत परिया में शिविर में हितग्राहियों को लाभान्वित किये जाने हेतु निर्देशित दिए। समय-सीमा की बैठक के दौरान लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के अधिकारी अनुपस्थित होने पर कलेक्टर हरिस एस. ने बिना सूचना के कार्यालय में अनुपस्थित रहने वाले श्री एचएस गौड़ सहायक अभियंता कोंटा, श्री रितेश पैकरा उप अभियंता कोंटा, श्री दशमेश ध्रुव उप अभियंता सुकमा और श्रीमती आकृति ताम्रकर उप अभियंता छिंदगढ़ को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए।

सीईओ डॉ. कन्नौजे ने मनरेगा के अंतर्गत चल रहे निर्माण कार्यों को शीघ्र पूरा करने के दिए निर्देश

बालोद(विश्व परिवार)। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. संजय कन्नौजे ने जिला पंचायत के सभाकक्ष में महात्मा गांधी नरेगा योजना की समीक्षा बैठक ली। डॉ. कन्नौजे ने वित्तीय वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 तक के समस्त अपूर्ण कार्यों की विस्तारपूर्वक समीक्षा करते हुए प्राथमिकता के साथ 30 सितम्बर 2024 तक पूरा करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। इसके साथ ही जनपद सीईओ व कार्यक्रम अधिकारी को अपूर्ण कार्यों का फील्ड विजिट करते हुए समय-सीमा में कार्य पूर्ण कराने को कहा। डॉ कन्नौजे ने कृषि एवं प्राकृतिक प्रबंधन संबंधी कार्यों में निर्धारित मापदण्ड के अनुरूप व्यय किये जाने, आदर्श अमृत सरोवर निर्माण में वृक्षारोपण, सामुदायिक शौचालय, पाथवे, बेंच, सोलर लाईट. घाट इत्यादि निर्माण कर सौंदर्यीकरण एवं आजीविका संबंधी विभिन्न घटको को कराने एवं खेल मैदान की स्वीकृति के संबंध में चर्चा की। सीईओ ने सामाजिक अंकेक्षण अंतर्गत निकासी बैठक में पारित निर्णयों पर समय-सीमा में आवश्यक कार्यवाही करते हुए शत-प्रतिशत वसूली किये जाने हेतु जनपद सीईओ को निर्देशित किया। कार्यस्थल का निरीक्षण करते हुए निर्धारित लक्ष्य के विरूद्ध प्रतिमाह शत-प्रतिशत जानकारी एरिया ऑफिसर मॉनिटरिंग ऐप के माध्यम से अपलोड किये जाने हेतु कार्यक्रम अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने जिले में स्वीकृत आंगनबाड़ी भवन, नवीन पंचायत भवन, सेग्रीगेशन शेड एवं वृक्षारोपण कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने सभी जनपद सीईओ, एसडीओ आरईएस एवं कार्यक्रम अधिकारी को फील्ड विजिट करते हुए गुणवत्तापूर्ण के साथ समयावधि में पूर्ण किये जाने के निर्देश दिए। उन्होंने सेग्रीगेशन शेड में अपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से 15 दिवस के भीतर पूर्ण कराने हेतु जनपद सीईओ को निर्देशित किया। इसके साथ ही संबंधित ग्राम पंचायत के सचिव को कारण बताओ नोटिस जारी करने निर्देश दिए गए। उन्होंने समीक्षा बैठक में अनुपस्थित होने के कारण उपसंचालक कृषि, वरिष्ठ वैज्ञानिक केवीके एवं अनुविभागीय अधिकारी ग्रामीण यांत्रिकी सेवा उपसंभाग डौण्डीलोहारा को कारण बताओ सूचना पत्र जारी करने के भी निर्देश दिए। इस दौरान लाईन डिपार्टमेंट के विभाग प्रमुख, उपसंचालक पंचायत, एपीओ मनरेगा, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत, अनुविभागीय अधिकारी ग्रामीण यांत्रिकी सेवा उपसंभाग एवं कार्यक्रम अधिकारी उपस्थित थे।

हाई स्कूल मेघा के छात्रों ने जल जगार कार्यक्रम में लिया भाग

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले में नारी शक्ति से जल शक्ति अभियान के तहत् जल जगार कार्यक्रम आयोजन किया जा रहा है द्य जिसके तहत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मेघा के छात्र छात्राओं ने तहसील कार्यालय मगरलोड में आयोजित इस अभियान में भाग लिया द्य कार्यक्रम में बताया गया कि रैन वाटर हार्वेस्टिग, रूफटर्फ वाटर और वेस्ट वाटर मेनेजमेंट के माध्यम से शुद्ध पानी को भूमि के अंदर भेजना है। जल संरक्षण के तहत विभिन्न माडल एवं वीडियो के माध्यम से बताया गया की यह जांच करें कि आपके घर में पानी का रिसाव न हो ।आपको जितनी आवश्यकता हो उतने ही जल का उपयोग करें ।पानी के नलों को इस्तेमाल करने के बाद बंद रखें ।नहाने के लिए अधिक जल को व्यर्थ न करें । ऐसी वाशिंग मशीन का इस्तेमाल करें जिससे अधिक जल की खपत न हो ।खाद्य सामग्री तथा कपड़ों को धोते समय नलो का खुला न छोड़े ।जल को कदापि नाली में न बहाएं बल्कि इसे अन्य उपयोगों जैसे -पौधों अथवा बगीचे को सींचने अथवा सफाई इत्यादि में लाए ।सब्जियों तथा फलों को धोने में उपयोग किए गए जल को फूलों तथा सजावटी पौधों के गमलों को सींचने में किया जा सकता है ।पानी की बोतल में अंतत: बचे हुए जल को फेंके नही अपीतु इसका पौधों को सींचने में उपयोग करें ।पानी के हौज को खुला न छोड़ें ।तालाबों, नदियों अथवा समुद्र में कूड़ा न फेंके ।कार्यक्रम मे दिनेश जाटव सी ए सी सरगी, विकास डरसेना उप अभियंता जल संसाधन विभाग मेघा स्कूल से रेडक्रॉस काउन्सलर अवध राम साहू व्याख्याता जयंत कुमार साहू लाइब्रेरियन श्रीमती विद्या साहू समस्त शिक्षक स्टाफ छात्र छात्राओं का भरपूर सहयोग रहा।

कलेक्टर कुणाल दुदावत ने समय-सीमा बैठक में विकास कार्यों की समीक्षा की

कोंडागांव(विश्व परिवार)। कलेक्टर कुणाल दुदावत ने मंगलवार को आयोजित समय-सीमा बैठक में जिले के विकास कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान, उन्होंने विशेष पिछड़ी कमार जनजाति के परिवारों की जानकारी लेते हुए इन परिवारों को सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। हैंडपंप के आसपास जमा होने वाले पानी के निस्तार के लिए सोख्ता गड्ढा बनाने की प्रक्रिया में तेजी लाने के निर्देश दिए गए, ताकि गंदे पानी से होने वाली समस्याओं का समाधान किया जा सके। महतारी वंदन योजना के लाभार्थियों को वन विभाग द्वारा पौधों का वितरण किया जा रहा है। इस दिशा में कलेक्टर ने जिले की सभी आंगनवाड़ी केंद्रों तक वन विभाग को पौधे पहुँचाने के निर्देश दिए ताकि पौध वितरण की गति बढ़ाई जा सके। स्वास्थ्य विभाग को आयुष्मान कार्ड के निर्माण में तेजी लाने के लिए डोर-टू-डोर जाकर शत-प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने के निर्देश दिए गए। खाद्य विभाग को 100 प्रतिशत ई-केवाईसी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए ताकि खाद्यान्न वितरण में सुगमता लाई जा सके। कलेक्टर ने मुख्यमंत्री जनदर्शन में आए आवेदनों की जानकारी लेते हुए संबंधित विभागों को इनका शीघ्र समाधान करने के निर्देश दिए। साथ ही कलेक्टर जनदर्शन में लंबित आवेदनों का समय पर निराकरण करने के भी निर्देश दिए।

सरकारी पीडीएस या रुपए का गबन करने वालों से वसूली करें एसडीएम - कलेक्टर धर्मेश साहू

सारंगढ बिलाईगढ(विश्व परिवार)। कलेक्टर धर्मेश कुमार साहू ने कलेक्टोरेट सभाकक्ष में जिले के प्रगतिरत कार्यों, मांग, शिकायत आदि से जुड़ें आवेदनों की समीक्षा समय सीमा की बैठक में किया। सरपंच सचिव सहित अन्य व्यक्ति या संस्था द्वारा किए गए सरकारी संपत्ति पीडीएस का या योजनाओं के राशि का वित्तीय अनियमितता (गबन) के लिए कलेक्टर साहू ने एसडीएम और सीईओ को वसूली करने के लिए निर्देशित किया। सरसींवां क्षेत्र के किसानों द्वारा कलेक्टर कार्यालय में प्रस्तुत किए राजस्व कार्यों फौती नामांतरण, बटांकन, सीमांकन, रिकार्ड दुरूस्ती, प्राकृतिक आपदा अंतर्गत पशु एवं जनहानि, आवास क्षति राजस्व पुस्तक परिपत्र (आरबीसी) 6-4 आदि आवेदनों पर कलेक्टर ने तहसीलदार को कहा कि ये आवेदन तहसील में देना चाहिए, कार्यालय में बैठते हो कि नहीं। तहसीलदार रूपाली मेश्राम ने कहा मैं कार्यालय में बैठती हूं सर, सभी लोग कलेक्टर कार्यालय आवेदन लेकर आते हैं। कलेक्टर ने एसडीएम बिलाईगढ़ डॉ स्निग्धा तिवारी को पटवारियों के साथ बैठक कर समस्या का समाधान करने के लिए कहा। कलेक्टर ने फसल लगे जमीन को छोड़कर बाकी जमीन का सीमांकन करने के निर्देश दिए। इसी प्रकार विगत माह में किए गए राजस्व पखवाड़ा के प्राप्त आवेदनों का रिपोर्ट एक सप्ताह के भीतर करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने पटवारी बस्ता का निरीक्षण करने एसडीएम और तहसीलदार को करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने प्रदेश में आयुष्मान कार्ड, पीएम विश्वकर्मा पंजीयन, भूअर्जन, पीडीएस राशन दुकानों से वसूली, जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर सलीहा की तैयारी के संबंध में अधिकारियों से बात की। बैठक में परियोजना निदेशक पंचायत हरिशंकर चौहान, संयुक्त कलेक्टर एस.के. टंडन, एसडीएम डॉ. स्निग्धा तिवारी, अनिकेत साहू, डिप्टी कलेक्टर डॉ. वर्षा बंसल, सीएमएचओ डॉ. एफआर. निराला, कार्यपालन अभियंता विद्युत नरेन्द्र नायक, प्रभारी अधिकारी महिला एवं बाल विकास बृजेन्द्र ठाकुर, विभिन्न विभागों के एसडीओ सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

कलेक्टर मयंक चतुर्वेदी ने एनआईसी कक्ष से पहली बार ली ऑनलाइन साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक

डीएमएफके निर्माण कार्यों के लिए विभाग करें नोडल की नियुक्ति-कलेक्टर चतुर्वेदी

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री मयंक चतुर्वेदी ने एनआईसी कक्ष से पहली बार ऑनलाइन लिंक के माध्यम से साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक ली। कलेक्टर ने कहा कि समय को देखते हुए अब नये युग की शुरुआत हुई है देश में बढ़ते नवीन टेक्नोलॉजी और एप के लॉन्च होने से कई समस्याओं का समाधान अब तुरंत ही हो जाती है। बुधवार को संयुक्त जिला कार्यालय भवन के एनआईसी कक्ष से जुड़कर कलेक्टर ने जिले के सभी अधिकारियों को अपने ही कार्यालय से ऑनलाइन लिंक के माध्यम से समय-सीमा की लंबित प्रकरणों की जानकारी ली। उन्होंने ने समीक्षा करते हुए कहा कि जिला खनिज न्यास निधि (डीएमएफ) के निर्माण कार्य के लिए संबंधित विभाग द्वारा अपने कार्यालय में एक लिपिक को डीएमएफसे संबंधित सभी कार्य के लिए नोडल नियुक्त किया जाए ताकि सभी डीएमएफ के निर्माण कार्यों की मॉनिटरिंग एवं देखरेख सही तरीके से हो सके। इसके साथ ही उन्होंने शासन की महत्वपूर्ण योजना नियद नेल्लानार ग्रामों में कौशल विकास के तहत प्रशिक्षण के लिए हितग्राही चिन्हांकित कर प्रशिक्षण प्रारंभ करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने नगरपालिका परिषद एवं नगर पंचायत क्षेत्रों में साफ-सफाई के विशेष ध्यान देने और नगरीय और ग्रामीण क्षेत्र में विद्युत,पेयजल इत्यादि व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके अलावा आंगनबाड़ी केन्द्रों को सक्षम आंगनबाड़ी केन्द्र के रूप में उन्नयन करने कहा और पात्र महतारी लाभार्थियों को उनकी बेटियों के लिए सुकन्या समृद्धि योजना से लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करने के निर्देश दिए। नारी निकेतन को सर्वसुविधायुक्त बनाने और वहां निवासरत महिलाओं के लिए कौशल प्रशिक्षण एवं पुनर्वास हेतु शासकीय विभाग के रिक्त पदों पर कलेक्टर दर में नियुक्त करने को कहा। कलेक्टर श्री चतुर्वेदी ने साप्ताहिक समय-सीमा के लंबित प्रकरणों को तत्काल समन्वय स्थापित कर निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके अलावा उन्होंने विभाग प्रमुखों से बारी-बारी समय-सीमा के प्रकरणों के संबंध में जानकारी लेते हुए निराकरण के करने के निर्देश दिए।

एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत बलदेव प्रसाद माध्यमिक शाला में हुआ पौधरोपण

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस की अपील पर मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय और विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह के नेतृत्व में प्रदेश में एक पेड़ माँ के नाम अभियान की शुरुआत की गई है। इसी तारतम्य में आज 21 अगस्त को बलदेव प्रसाद माध्यमिक शाला बसंतपुर दक्षिण मंडल में शक्ति केंद्र प्रभारी कमल सोनी ने पौधारोपण किया। श्री सोनी ने कहा कि इस पहल का मुख्य उद्देश्य वर्तमान समय में बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग से निजात पाना एवं इस धारा के भविष्य को सुरक्षित रखना है। इसलिए आप सभी इस अभियान का हिस्सा बनें। अपने घर-आँगन, खेत में अपनी माता जी के साथ या माता जी की स्मृति में पौधा लगाते हुए अपनी तस्वीर लें। इस तस्वीर पर एक पेड़ माँ के नाम प्रोफाइल पिक्चर फ्रेम लगाकर सोशल मीडिया पर डिस्प्ले के रूप में लगाएं। श्री सोनी ने आगे कहा कि इस अभियान में अधिक से अधिक लोग शामिल होकर छत्तीसगढ़ को हरा भरा बनाने में अपना अमूल्य योगदान दें। एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत आप सभी पौधारोपण करें। साथ ही पौधों के संरक्षण एवं संवर्धन को बढ़ाने हेतु पौधों को जीवित रखने का संकल्प ले।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर शुक्रवार 23 अगस्त 2024

व्यापार समाचार

भारतीय रेल ने ट्रेनों के लिए लॉन्च किया हाई-टेक वाटर लेवल मॉनिटरिंग सिस्टम

गुवाहाटी(एजेंसी)। भारतीय रेलवे की ओर से यात्रियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए एडवांस वाटर लेवल मॉनिटरिंग सिस्टम को लॉन्च किया गया है। इस सिस्टम को ट्रायल आधार पर ब्रह्मपुत्र मेल एक्सप्रेस में लगाया गया है। इस नए एडवांस सिस्टम को लगाने का उद्देश्य लंबी दूरी की ट्रेनों में यात्रियों के लिए पानी की उपलब्धता को सुनिश्चित करना है। पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (एनएफआर) के मुख्य पब्लिक रिलेशन ऑफिसर (सीपीआरओ) कपिंजल किशोर शर्मा ने कहा कि कामाख्या रेलवे स्टेशन पर ब्रह्मपुत्र मेल एक्सप्रेस के एक रेक में पायलट प्रोजेक्ट के तहत रियल टाइम वाटर मॉनिटरिंग सिस्टम %वाटर लेवल इंडिकेटर% लगाया गया है। अगर यह पायलट प्रोजेक्ट सफल हो जाता है तो इसे आने वाले समय में अन्य ट्रेनों में भी लगाया जाएगा। इससे ट्रेन यात्रा के दौरान पानी का प्रभावी तरीके से प्रबंधन किया जा सकेगा। इस एडवांस सॉल्यूशन के माध्यम से आसानी से ट्रेन के डिब्बों में मौजूद पानी की उपलब्धता का पता लगाया जा सकता है। इसमें एलओआरए और जीपीआरएस आधारित टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया गया है। इसकी रेंज भी अधिक है और यह कम पावर का इस्तेमाल करते हुए डेटा ट्रांसमिट कर सकता है, जो कि रिमोट लोकेशन के लिए काफी उपयोगी है। इस सिस्टम के माध्यम से आसानी से रियल-टाइम डेटा प्राप्त किया जा सकेगा। इसका सेंसर पानी के स्तर को 0.5 प्रतिशत की सटीकता के साथ एक से पांच मीटर के बीच नापता है। एनएफआर के महाप्रबंधक चेतन कुमार श्रीवास्तव के नेतृत्व में कामाख्या रेलवे स्टेशन पर इस नए इनिशिएटिव की शुरुआत की गई है। यह गुवाहाटी में गुवाहाटी रेलवे स्टेशन के बाद दूसरा सबसे बड़ा स्टेशन है। शर्मा ने आगे कहा कि ब्रह्मपुत्र मेल एक्सप्रेस पर लोगों की यात्रा पहले के मुकाबले अधिक आरामदायक होगी और पूरी ट्रिप के दौरान पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकेगी।

OPPO इंडिया ने नया F27 5G लॉन्च किया

नईदिल्ली। OPPO इंडिया ने F 27 5G लॉन्च किया है। इस स्मार्टफ़ोन में OPPO की नई हैलोलाईट (Halo Light) है, स्मार्टफोन के रियर में एलईडी का एक घेरा, जो संगीत के साथ जगमगाता है। साथ ही इसमें एडवांस्डएआई कैमरा फीचर्स भी हैं, जिनकी मदद से आप पार्टी की बेहतरीन तस्वीरेंलेकर उन्हें अपने दोस्तों के साथ साझा कर सकते हैं और सोशल मीडिया पर पोस्ट कर सकते हैं। OPPO F27 5G दो रंगों ड्रूअंबर ऑरेंज (Amber Orange) और एमराल्ड ग्रीन (Emerald Green) में मिलेगा। इसके 128GB वैरिएंट का मूल्य 22,999 रुपये और 256GB वैरिएंट का मूल्य 24,999 रुपये होगा।

पार्टी-रेडी डिज़ाईन एवं फीचर्स - OPPO F27 5G में कैमरा मॉड्यूल के चारों ओर OPPO F27 5G प्रोका अपग्रेडेड कॉस्मोस रिंग डिज़ाईन है, जो डायनामिक हैलो लाईट के साथ आता है, जो पार्टी का माहौल बनाने के लिए संगीत के साथ जगमगाता है। इस हैलो लाईट (Halo Light)को कॉन्फिगर किया जा सकता है ताकि यह डेस्क पर फोन उल्टा रखे होने पर चुपचाप मैसेज और अपडेट्स का नोटिफिकेशन दे सके।

भारतीय शेयर बाजार ने पिछले 25 वर्षों में वॉरेन बफे की कंपनी से भी दिया ज्यादा रिटर्न : रिपोर्ट

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय शेयर बाजार का प्रदर्शन पिछले कई वर्षों में काफी शानदार रहा है। राजनीतिक और वैश्विक उठापटक के बीच भी बाजार ने लचीलापन दिखाया है और बीते 25 वर्षों में दुनिया के प्रसिद्ध निवेशक वॉरेन बफे के नेतृत्व वाली निवेश फर्म बर्कशायर हैथवे से भी अच्छा प्रदर्शन किया है। एक एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एएमसी) की रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। भारत केंद्रित सिंगापुर की एएमसी कंपनी हेलिओस द्वारा जारी की गई रिपोर्ट में कहा गया है कि निफ्टी 500 ने 12.56 प्रतिशत का वार्षिक रिटर्न और बर्कशायर हैथवे ने 9.52 प्रतिशत का वार्षिक रिटर्न (डॉलर) 31 जुलाई 1,999 से लेकर 31 जुलाई,2024 के बीच दिया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि इस दौरान भारत को कई सारी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा, जिसमें मई 1998 परमाणु बम के टेस्ट करने के बाद भारत पर लगे अमेरिकी प्रतिबंध, 1999 का कारगिल युद्ध शामिल हैं और साथ ही गठबंधन सरकारों के समय में भारतीय बाजार ने लचीलापन दिखाया है। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि 2004 में अचानक से सरकार बदलने के कारण बाजार 17 प्रतिशत गिर गया और वहीं, 2008 की ग्लोबल फाइनेंसियल क्राइसिस में भी बाजार में भारी गिरावट देखने को मिली थी। वहीं, 2011 से 2015 के बीच भ्रष्टाचार और सूखे के कारण भी बाजार को चुनौतियों का सामना करना पड़ा। बाजार सफलतापूर्वक इन झटकों से निकलने में सफल रहा है और निवेशकों को सकारात्मक रिटर्न दिया है।

रक्षाबंधन पर क्विक कॉमर्स प्लेटफॉर्म ने हर मिनट करीब 700 राखियां बेचीं

नई दिल्ली(एजेंसी)। 19 अगस्त को रक्षाबंधन के दिन चंद मिनटों में सामान डिलीवर करने वाली कंपनियों यानी क्विक कॉमर्स कंपनियों ने बिक्री के मामले में धमाकेदार मौजूदगी दर्ज कराई। देश ने डाकघरों में जाकर खरीदारी करने की बजाय झटपट और बिना किसी परेशानी के डिलीवरी की ओर रुख किया। पीटीआई की खबर के मुताबिक, रक्षाबंधन पर क्विक कॉमर्स प्लेटफॉर्म ने रिकॉर्ड बिक्री की। क्विक कॉमर्स बाजार में करीब 40 फीसदी हिस्सेदारी रखने वाली ब्लिंकिट ने हर मिनट करीब 700 राखियां बेचीं। ब्लिंकिट के सीईओ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपनी खुशी जाहिर करते हुए पोस्ट लिखा। ब्लिंकिट के सीईओ और सह-संस्थापक अलबिंदर ढींडसा ने एक्स पर लिखा - हम ब्लिंकिट पर एक दिन में अब तक के सबसे ज़्यादा ऑर्डर को पार कर लेंगे। हमने आज सबसे ज़्यादा (प्रति मिनट ऑर्डर), चॉकलेट की बिक्री और ज़्यादातर दूसरे मेट्रिक्स भी हासिल किए! और अपने चरम पर - हमने 693 (प्रति मिनट राखी) हासिल की।

बाबर आजम की खोई हुई फॉर्म हासिल करने पर रहेगी पाकिस्तान की नजर

रावलपिंडी(एजेंसी)। अगले पांच महीनों में नौ टेस्ट मैच खेलने के लिए तैयार पाकिस्तान के रेड-बॉल क्रिकेट में व्यस्त कार्यक्रम की शुरुआत गीली आउटफील्ड के साथ हुई। रात भर हुई बारिश के कारण बुधवार को यहां बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट की शुरुआत में देरी हो रही है। पाकिस्तान को उम्मीद है कि आगामी रेड-बॉल मैचों के आधार पर विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में जगह बनाने के लिए बांग्लादेश के खिलाफ टीम दो टेस्ट मैचों की सीरीज की चुनौती के लिए तैयार है। लेकिन रावलपिंडी स्टेडियम में बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट मैच की शुरुआत गीली आउटफील्ड के चलते देरी हुई। इसके चलते टॉस भी लेट हो गया है। पाकिस्तान के टेस्ट कप्तान शान मसूद को उम्मीद है कि इस सीरीज से उन्हें सीजन के आगे के मुकाबलों के लिए बेहतर प्रदर्शन करने में मदद मिलेगी। वह एक ऐसी मजबूत टीम बनाना चाहते हैं जो फाइनल तक जा सके, साथ ही वह युवा बल्लेबाजों को मौका देने की योजना बना रहे हैं। शान मसूद ने कहा, हमारे दल में 20-25 खिलाड़ी हैं। हमें शुरू में लगा कि मोहम्मद हुरैरा को परखने का यह हमारा आदर्श मौका है। उन्होंने पिछले तीन या चार वर्षों में घरेलू क्रिकेट में अच्छा प्रदर्शन किया है। हमने इस श्रृंखला में इमाम को आराम दिया है। सैम भी अब अच्छी लय में हैं, उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरी पारी में अपनी क्षमता दिखाई थी। एक टीम के रूप में, आपको निरंतरता का संदेश देना होता है। इसलिए हम खिलाड़ियों का समर्थन करने की कोशिश करेंगे। हम उसे उचित मौका देना चाहते हैं। पाकिस्तान की नजर पूर्व कप्तान और प्रमुख टेस्ट बल्लेबाज बाबर आजम के फॉर्म पर भी होगी, जिनका औसत 2019 से 2022 की अवधि के दौरान 60 से गिरकर, बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला से पहले 37.41 पर आ गया है। पिछले कुछ सीजन में बाबर ने 9 टेस्ट मैचों में सिर्फ़ एक शतक और तीन अर्धशतक लगाए हैं। रेड-बॉल वाली क्रिकेट में अपनी आखिरी सीरीज में बाबर का औसत 21 रहा, जो 2017-18 के बाद से किसी सीरीज में उनका सबसे कम औसत है। अपनी फॉर्म खोने के अलावा, टीम में बाबर आजम का कद और अधिकार भी कम हो गया है। उन्होंने टेस्ट और वनडे में अपनी कप्तानी खो दी है और उनके निराशाजनक टी20 विश्व कप अभियान के मद्देनजर टी20 की कप्तानी भी खोने की संभावना है। पाकिस्तान क्रिकेट को उम्मीद है कि आने वाले व्यस्त सत्र में बाबर अपनी फॉर्म वापस हासिल कर लेंगे।

आईसीसी रैंकिंग में स्मृति मंधाना का दबदबा काफी पीछे रह गईं कप्तान हरमनप्रीत

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उपकप्तान स्मृति मंधाना ने हाल में तीनों ही फॉर्मेट में दमदार प्रदर्शन किया है जिसका असर उनकी आईसीसी रैंकिंग में दिख रहा है. हाल ही में आईसीसी के द्वारा वनडे की टॉप बल्लेबाजों की सूची जारी की है जिसमें मंधाना शीर्ष बल्लेबाजों में में शामिल हैं. हरमनप्रीत कौर 9 वें स्थान पर काबिज हैं. पहले स्थान पर इंग्लैंड की नेट सेवियर ब्रंट और दूसरे स्थान पर साउथ अफ्रीका की लौरा वोल्वार्ट हैं. चमारी अट्टापट्टू चौथे स्थान पर हैं. बता दें कि एशिया कप के फाइनल में भारत को हराने में श्रीलंकाई कप्तान की बड़ी भूमिका रही थी. आईसीसी विमेन टी 20 विश्व कप 3 अक्टूबर से 20 अक्टूबर 2024 तक बांग्लादेश में आयोजित होने वाला था लेकिन बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थिरता की वजह से आईसीसी इवेंट को यूएई में शिफ्ट कर दिया है. हालांकि आयोजन अधिकार अभी भी बांग्लादेश के पास ही है. भारतीय टीम के लिहाज से इस विश्व कप में मंधाना का किरदार काफी अहम रहने वाला है. मौजूदा टीम में कप्तान हरमनप्रीत कौर, ऋचा घोष, शेफाली वर्मा और जेमिमा रोड्रिग्स जैसी बल्लेबाज हैं लेकिन ओपनिंग करते हुए अगर मंधाना बेहतर शुरुआत देती हैं टीम के लिए वो काफी अहम और निर्णायक साबित होगा.

बोर्ना कोरिच ने सेबेस्टियन बाएज से पिछले साल विंस्टन-सलेम की हार का बदला लिया

विंस्टन-सलेम (यूएसए)(एजेंसी)। मैराथन सेमीफाइनल में हार के एक साल बाद, बोर्ना कोरिच ने विंस्टन-सलेम ओपन में उस हार का बदला लिया, क्रोएशियाई ने शीर्ष वरीयता प्राप्त और गत चैंपियन सेबेस्टियन बाएज को 6-3, 6-4 से हरा दिया। ऐसा लगता है कि कॉरिच ने एक साल पहले उस मैच से मिली सीख का इस्तेमाल किया और उसी इवेंट में जोरदार वापसी की। पिछले साल एटीपी 250 में मिली हार के बारे में कोरिच ने कहा, मैंने उस मैच से सीखा, मैं कल रात वह मैच देख रहा था। एटीपी टूर ने कोरिच के हवाले से कहा, मैं मैच के लिए तैयार था और यह मेरे लिए बहुत बेहतर था कि हम आज खेले जब धूप थी। पिछले साल हम शाम को खेले थे, जो वास्तव में बहुत धीमा था। 27 वर्षीय क्रोएशियाई ने बाएज के साथ अपनी एटीपी हेड-टू-हेड श्रृंखला में 1-2 का सुधार किया। 2023 में उनकी तीन घंटे 19 मिनट की विंस्टन-सलेम भिड़ंत के कुछ ही दिनों बाद, बाएज ने यूएस ओपन के पहले दौर में कोरिच को फिर से हराया। 16वें राउंड में, तीन बार की टूर-स्तरीय टाइटललिस्ट का अगला मुकाबला 16वीं वरीयता प्राप्त रिंकी हिजिकाटा से होगा। इससे पहले, अमेरिकी लकी लूजर ज़ाचरी स्वजदा ने अपने करियर की सर्वोच्च रैंकिंग वाली जीत हासिल की जब उन्होंने विश्व नंबर 29 फ्रांसिस्को सेरुंडोलो को 6-4, 6-4 से हराया। 21 वर्षीय स्वजदा पीआईएफ एटीपी लाइव रैंकिंग में 101वें स्थान पर हैं क्योंकि उनका लक्ष्य शीर्ष 100 में पदार्पण करना है। डेविड गोफिन ने पांचवीं वरीयता प्राप्त इतालवी लुसियानो डार्डेरी को 6-2, 6-4 से हराया जबकि 10वीं वरीयता प्राप्त लोरेंजो सोनेगो ने डोमिनिक स्ट्राइकर को 6-4, 6-1 से हराया।

हाउसिंग प्रोजेक्ट्स पर 900 करोड़ रुपये तक का निवेश करेगी ये रियल एस्टेट कंपनी, सीएमडी ने बताया प्लान

नई दिल्ली(एजेंसी)। जानी-मानी रियल एस्टेट कंपनी कीस्टोन रियलटर्स चालू वित्त वर्ष 2024-25 में हाउसिंग प्रोजेक्ट्स के निर्माण पर अपने निवेश को बढ़ाकर 800 से 900 करोड़ रुपये करेगी। ये निष्पादन क्षमताओं को बढ़ाने के लिए कंपनी की स्ट्रेटजी का ही एक हिस्सा है। कंपनी के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर (सीएमडी) बोमन रुस्तम ईरानी ने एक इंटरव्यू में कहा कि कंपनी अपने बिजनेस को बढ़ाने के लिए चालू वित्त वर्ष में कंस्ट्रक्शन और जमीन खरीदने पर काफी निवेश करेगी। बताते चलें कि बोमन रुस्तम ईरानी रियल एस्टेट सेक्टर की टॉप संस्था क्रेडाई के अध्यक्ष भी हैं। कीस्टोन रियलटर्स के सीएमडी ने कहा, हम चालू वित्त वर्ष में कंस्ट्रक्शन पर करीब 800 से 900 करोड़ रुपये का निवेश करेंगे। पिछले वित्त वर्ष में हमने कंस्ट्रक्शन पर करीब 400 करोड़ रुपये का निवेश किया था। ईरानी ने कहा कि कंपनी के पास ग्रोथ के लिए निवेश के लिए करीब 3,000 करोड़ रुपये की अतिरिक्त नकदी है। सीएमडी ने कहा, हमने योग्य संस्थागत निर्गम और आंतरिक नकदी प्रवाह से 800 करोड़ रुपये जुटाए हैं। बोमन रुस्तम ईरानी ने कहा कि हाउसिंग मार्केट में अभी भी मजबूत डिमांड बनी हुई है। इसलिए कंपनी ने चालू वित्त वर्ष में अपनी सेल्स बुकिंग में 32 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 3,000 करोड़ रुपये तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने इस उम्मीद जताते हुए कहा कि कंपनी इस आंकड़े को पार कर लेगी। कंपनी ने चालू वित्त वर्ष की पहली (अप्रैल-जून) तिमाही में 611 करोड़ रुपये का प्री-सेल हासिल किया है, जो एक साल पहले की समान तिमाही के 502 करोड़ रुपये से 22 प्रतिशत ज्यादा है। वित्त वर्ष 2023-24 में कंपनी ने 2,266 करोड़ रुपये की प्रॉपर्टी बेची थीं। कीस्टोन रियलटर्स, रुस्तमजी ब्रांड के तहत अपनी प्रॉपर्टी बेचता है।

रक्षाबंधन स्पेशल: कलर्स के कलाकारों ने अपने भाई-बहनों के साथ अपने रिश्ते की कहानियां साझा कीं

नईदिल्ली। कलर्स के शो 'परिणीति' में नीति की भूमिका निभा रही तन्वी डोगरा कहती हैं, जिस पल मैंने रोहन के नन्हें हाथों को थामा था, मुझे पता था कि वह मेरी ज़िंदगी का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बन जाएगा। हमने जो समय सा ?थ बिताया है, मैंने उससे बहुत सारी अद्भुत चीजें सीखी हैं। उसके साथ सफ़र करने से किसी रियलिटी शो में होने जैसा लगता है, जहां उसका निरंतर मनोरंजन हर किसी को हंसाता रहता है। मुझे अभी भी याद है कि हम रक्षाबंधन के उपहारों के लिए झगड़ते थे। यह त्योहार हमेशा मेरे लिए यादगार अवसर रहा है, और मैं कोशिश करती हूं कि मैं हर साल यह दिन उसके साथ बिताऊं। वह मेरे शो परिणीति का सबसे बड़ा फैन है, और वह हमेशा शो में अगले ट्विस्ट से संबंधित जानकारी मांगता है। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि ज़िंदगी हमें कहां ले जाती है, वह हमेशा मेरा छोटा भाई रहेगा, और मैं हमेशा उसकी सबसे बड़ी चीयरलीडर रहूंगी।

कलर्स के 'मिश्री' में राघव की भूमिका निभा रहे नमिश तनेजा कहते हैं, मैं हमेशा कोशिश करता हूं कि चाहे जो भी हो, लेकिन मैं रक्षाबंधन के दिन घर पर ही रहूं। हमारा परिवार इस त्यौहार को बहुत धूमधाम से मनाता है। सुबह सभी सदस्य इकट्ठा होकर मातारानी की पूजा-अर्चना करते हैं और फिर सभी कज़िन्स साथ खाना खाते हैं। मैं और मेरी बहन कभी एक-दूसरे को अपना प्यार व्यक्त नहीं करते है, लेकिन हम एक-दूसरे का समर्थन करते हैं। उसे मिश्री को मिल रही तारीफपर बहुत गर्व है, लेकिन वह कभी भी मुझसे यह नहीं कहेगी। ऐसा प्यार सबसे अधिक मजबूत और पवित्र होता है।

सैमसंग त्यौहारों से पहले भारत में लॉन्च करेगा 10 एआई वाशिंग मशीनें

गुरुग्राम: भारत के सबसे बड़े कंज्यू मर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रैंड, सैमसंग ने इस साल त्यौगहारों के सीजन के लिये 10 वाशिंग मशीनें पेश करने की अपनी योजना की घोषणा की है। कंपनी ने हाल ही में अपनी आगामी फ्रंट-लोड एआई-पावर्ड वाशिंग मशीनों का टीज़र दिखाया था। यह मशीनें इस महीने के आखिर में लॉन्चा की जाएंगी। नई एआई-पावर्ड वाशिंग मशीनें भारतीय ग्राहकों के लिए कंपनी के घरेलू उपकरणों की प्रीमियम बीस्पो क एआई रेंज का हिस्साा हैं। इन मशीनों में बेहतर कनेक्टिविटी दी गई है और यह इंटेलिजेंट तथा सहज समाधानों के साथ शानदार अनुभव देती हैं। यह सभी मिलकर स्मा र्ट घर के अनुभव में बदलाव लाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। एक वक्त व्य में सैमसंग इंडिया ने कहा, ''इस साल त्यौंहारों के सीजन से पहले सैमसंग भारत में निर्मित एआई-पावर्ड वाशिंग मशीनों की एक रोमांचक श्रृंखला लॉन्चे करेगी। नई श्रृंखला में 10 मॉडल होंगे और इनमें मौजूद एआई इनोवेशन कपड़े धोने की पूरी प्रक्रिया को आसान बनाएंगे। यह सीरीज लॉन्ड्री के बाजार में एक गेम चेंजर बन सकती है और इससे सैमसंग इंडिया की वाशिंग मशीनों के पोर्टफेलियो का विस्ताकर होगा।'' सैमसंग इंडिया ने कहा कि जल्द ही लॉन्चआ होने जा रही ये वाशिंग मशीनें कपड़े धोने में लगने वाली मेहनत को करेंगी और ये एआई-पावर्ड फीचर्स से लैस होंगी। इससे यूजर्स की 'लाइफ्स्टानइल' बेहतर हो जाएगी। कुल मिलाकर यूजर्स का अनुभव ज्यांदा 'स्मार्ट, बेहतर और पर्यावरण के अनुकूल' हो जाएगा। सैमसंग ने इस साल के अप्रैल में भारतीय उपभोक्तामओं के लिये बीस्पोसक एआई होम अप्लारयंसेज के 2024 लाइन-अप से पर्दा हटाया था। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की उन्न त टेक्नोआलॉजीज और स्मार्टथिंग्स4 से लैस यह नये उत्पागद ग्राहक की सुविधा में एक मील का पत्थिर हैं। इसका श्रेय हाइपर-कनेक्टेअड इकोसिस्ट?म को जाता है। बीस्पो क एआई कंपनी के ''एआई फॉर ऑल'' विजन का प्रतीक है। कंपनी बेहतर सुरक्षा, संवहनीयता एवं सुलभता से जीवन को समृद्ध बनाना चाहती है।

देवरानी बनाम जेठानी का ड्रामा तेज हो गया है, क्योंकि कलर्स के नए शो, 'सुमन इंदौरी' में अशनूर कौर और अनीता हसनंदानी के बीच टकराव होने वाला है

नईदिल्ली। मौजूदा बदलती दुनिया में, जेठानी ने नई सास की भूमिका ले ली है। कलर्स के नवीनतम शो, 'सुमन इंदौरी' ने इस कन्टेम्पररी ड्रामा में जान फूंक दी है। यह शो देवरानी-जेठानी के पारंपरिक टकराव में स्ट्रीट-स्मार्ट फ्लेवर को भी शामिल कर रहा है, जिसका उद्देश्य युवा दर्शकों को भी आकर्षित करना है। मध्य प्रदेश के प्रमुख नगर इंदौर में स्थापित, यह कहानी एक नेकदिल लड़की सुमन के इर्द-गिर्द घूमती है। सुमन को अनिच्छा से शहर के एक बाहुबली परिवार के चतुर राजनेता तीर्थ से शादी करनी पड़ती है, जिसके बाद उसे एक बहू के रूप में अपनी नई भूमिका निभानी होगी। लेकिन ससुराल में उसका सामना अपनी दबंग जेठानी देविका से होगा, जो परिवार की मुखिया बनना चाहती है और सुमन को अपने पारिवारिक विरासत के लिए खतरा मानती है। उत्साही सुमन के रूप में अशनूर कौर, चालाक राजनेता तीर्थ के रूप में ज़ैन इमाम, और दबंग देविका के रूप में अनीता हसनंदानी अभिनीत, 'सुमन इंदौरी' भावनाओं, सत्ता संघर्ष और पारिवारिक टकरावों का दिलचस्प मिश्रण पेश करने का वादा करता है, जो 'देवरानी-जेठानी' के अनूठे रिश्ते पर एक नया दृष्टिकोण पेश करता है। सुमन का किरदार निभाने को लेकर अपना उत्साह व्यक्त करते हुए, अशनूर कौर ने कहा, मैं दर्शकों के समक्ष 'सुमन इंदौरी' को पेश करते हुए बहुत खुश हूं! इस शो के साथ, मैं 3 साल बाद टेलीविज़न पर वापसी कर रही हूं और मुझे लगता है कि यह शो इसके लिए परफेक्ट है और मैं इस शो को लेकर उत्साहित हूं। एक ऐसी उत्साही चाट विक्रेता सुमन का किरदार निभाने का यह अनुभव रोमांचक है, जिसकी ज़िंदगी में एक नाटकीय बदलाव आया है। इंदौर का प्रभावशाली माहौल भावनाओं और पारिवारिक दृष्टिकोणों के इस उतार-चढ़ाव भरे सफ़र के लिए एकदम सही पृष्ठभूमि है। हमारी शूटिंग के दौरान मुझे इस शहर से वाकई प्यार हो गया है। इस शहर की जीवंतता और इसके निवासियों का उत्साह हमारे शो के हर सीन में साफ़्तौर पर दिखाई देगा।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शुक्रवार 23 अगस्त 2024

हितग्राहियों को लाभान्वित करने 24 अगस्त तक परिया कैंप में शिविर का आयोजन

रायपुर (विसं)। नियद नेल्लानार योजना के तहत विकासखण्ड कोन्टा के परिया कैंप एवं आश्रित ग्राम परिया, सामसट्टी, बोरगुड़ा, बगडेगुड़ा में आयुष्मान कार्ड से वंचित हितग्राहियों का शत-प्रतिशत आयुष्मान कार्ड बनाने, नवीन आधार कार्ड बनाने एवं संशोधन तथा बैंक खाता खोले जाने हेतु 22 अगस्त से 24 अगस्त तक शिविर का आयोजन किया गया है। जिला प्रशासन द्वारा सभी संबंधित अधिकारियों को शिविर में हितग्राहियों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए गए है।

संक्षिप्त समाचार

प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के लाभार्थियों के लिए आईटीआई-सड्डू में कार्यशाला का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत सरकार के वित्तीय सेवा विभाग के तहत कार्य करने वाले राज्यस्तरीय बैंकर्स समिति और छत्तीसगढ़ स्टेट बैंकर्स समिति, रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के संभावित लाभार्थियों के बीच जन-जागरूकता के लिए 23 अगस्त, 2024 को सुबह 11 बजे से आईटीआई-सड्डू, रायपुर में एक कार्यशाला/सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य लाभार्थियों के बीच योजना के लाभों और उपलब्ध होने वाले ऋण सुविधाओं के बारे में जागरूक करना है। सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र बैंकों के राज्य प्रमुख, ऋण प्रसंस्करण प्रकोष्ठों के एजीएम, विभिन्न जिलों के अग्रणी बैंक प्रबंधक, जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र के निदेशक, आईटीआई माना, रायपुर, आईटीआई सड्डू, रायपुर आजीविका महाविद्यालय, रायपुर, आरएसईटीआई, रायपुर, राष्ट्रीय कौशल विकास निगम, रायपुर के प्राचार्यों के साथ ही साथ पीएम विश्वकर्मा योजना के लाभार्थी और योजना का बुनियादी प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षु इस कार्यालय/सेमिनार में शामिल होंगे।

रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड में महाप्रबंधक (जनसंपर्क) के पद पर होगी नियुक्ति, आवेदन की अंतिम तिथि 09 सितंबर

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड ने महाप्रबंधक (जनसंपर्क) के पद हेतु अभ्यर्थियों से आवेदन आमंत्रित किया है। आवेदन की अंतिम तिथि 09 सितंबर 2024 है। रायपुर स्मार्ट सिटी लि. के आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार यह संविदा आधारित नियुक्ति है, जिसमें 90,000/- रुपए तक का वेतन देय होगा। शैक्षणिक योग्यता, अनुभव, आयु सीमा सहित अन्य नियम शर्तों से संबंधित सभी जानकारियां रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के आधिकारिक वेबसाइट https://smartcitytyraipur.cgstate.gov.in/ के नोटिस बोर्ड पर देखी जा सकती है। अभ्यर्थी अपना ऑनलाइन आवेदन hr.rscl.raipur@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से 09 सितंबर सायं 5.30 बजे तक प्रेषित कर सकते है। विस्तृत जानकारी के लिए कार्यालयीन दिवस पर मोबाइल नंबर 9827899855 पर भी संपर्क कर सकते है।

23वीं छत्तीसगढ़ राज्य शूटिंग चैंपियनशिप का समापन समारोह 23 अगस्त को

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ प्रदेश राइफल एसोसिएशन एवं जिंदल स्टील एंड पावर लिमिटेड के तत्वाधान में 23वी छत्तीसगढ़ राज्य शूटिंग चैंपियनशिप का समापन समारोह 23 अगस्त को माना स्थित चौथी बटालियन शूटिंग रेंज में किया जायेगा। शूटिंग रेंज के विजेता खिलाड़ियों को अलग अलग श्रेणी में पदक वितरण भी किये जायेंगे। 10मीटर एयर राइफल /पिस्टल महिला एवं पुरुष वर्ग, 50 मीटर राइफल/प्रोन /3प, 25 मीटर स्टैण्डर्ड पिस्टल, समापन समारोह के मुख्य अतिथि टंकराम वर्मा जी (खेलमंत्री छग) विशिष्ट अतिथि विवेक शर्मा (संचालक सैनिक कल्याण बोर्ड एवं श्रीमती तनुजा सलाम संचालक खेल एवं युवा कल्याण विभाग मुख्य रूप से शामिल होंगे।

दिव्यांगजन समाज पर बोझ नहीं हैं : राज्यपाल रमेन डेका

'दिव्य कला शक्ति' कार्यक्रम सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्यपाल श्री रमेन डेका के मुख्य आतिथ्य में आज यहां 'दिव्य कला शक्ति' कार्यक्रम संपन्न हुआ। जिसमे दिव्यांगजनों ने अपनी कला प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर राज्य की प्रथम महिला श्रीमती रानी डेका काकोटी, रायपुर के सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल सहित जनप्रतिनिधि एवं पूरे देश से आये दिव्यांग उद्यमी एवं कलाकार उपस्थित थे।

राज्यपाल श्री डेका ने इस अवसर पर कहा कि दिव्यांगजन समाज पर बोझ नहीं हैं बल्कि राष्ट्र की प्रगति में योगदान देते हैं। उन्होंने कहा कि दिव्यांगजनों को सहानुभूति का पात्र नहीं समझना चाहिए। उनके प्रति समाज के नजरिये में बदलाव आना चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में ''सबका साथ-सबका विकास'' के तहत समावेशी रूप से दिव्यांगजनों सहित सभी को शामिल किया गया है। दिव्यांगों को यह ऐहसास दिलाना होगा कि वे भी समाज के लिए महत्वपूर्ण अंग हैं। उनके विकास के लिए सार्वजनिक स्थानों में सुलभ बुनियादी ढ़ांचा, सुगम्य परिवहन के साधनों की उपलब्धता, टेक्नोलॉजी तक आसान पहुंच बनाने की ओर अधिक ध्यान देना होगा। बच्चों के पाठ्यक्रम में भी ऐसी कहानियां आदि शामिल करना चाहिए, जिससे उनमे दिव्यांगजनों के प्रति करूणा की भावना जागृत हो, किन्तु उनसे वे सामान्य व्यक्ति की तरह व्यवहार करें।

राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा दिव्यांगजनों की प्रतिभाओं का प्रदर्शन करने और उन्हें सशक्त करने ''दिव्यकला मेला और दिव्य कला शक्ति'' जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना एक अत्यंत सराहनीय कदम है। ऐसे आयोजनों से दिव्यांगजनों को यह महसूस होता है कि पूरा समाज उनके साथ खड़ा है और उनको प्रोत्साहन दे रहा है।

राज्यपाल ने कहा कि भारत सरकार सहित छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा भी दिव्यांगजनों का जीवन-यापन सरल बनाने के लिए अनेक योजनाएं, संचालित की जा रही हैं। दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण के साथ विभाग द्वारा कम ब्याज दर पर ऋण भी उपलब्ध कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि दिव्यांगजनों को शिक्षित करने के साथ ही उन्हें रोजगार के अवसर देने, व्यवसायिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराने, आवास आबंटन में प्राथमिकता देने और उनके परिवारों को विशेष सहायता देने से दिव्यांगजन भी समाज और राष्ट्र की प्रगति में बराबरी से योगदान दे सकेंगे।

इस अवसर पर रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि दिव्यांगजनों में अलग तरह की विषेषताएं होती है और वे अनेक क्षेत्रों में बखूबी अपना दायित्व निभा रहे हैं। उन्होंने केंद्रीय मंत्री विरेंद्र कुमार द्वारा रायपुर में दिव्यांग पार्क बनाये जाने की घोषणा करने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं केंद्रीय मंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया। उल्लेखनीय है कि रायपुर में 17 से 22 अगस्त तक 16 राज्यों से आये हुए दिव्यांग शिल्पकार एवं उद्यमियों द्वारा अपने शिल्प की मार्केटिंग की जा रही है, जिसे छत्तीसगढ़ के लोगों ने अत्यंत सराहा है। कार्यक्रम में विधायक पुरंदर मिश्रा, प्रबंध संचालक नवीन शाह, संचालक समाज कल्याण श्रीमती रोक्तिमा यादव सहित विभिन्न राज्यों से आये दिव्यांगजन उपस्थित थे।

एनआईटी रायपुर में आयोजित किया गया नया भारत उत्सव युवा संवाद

रायपुर (पीआईबी)। राष्ट्रीय प्रद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) रायपुर ने 22 अगस्त, 2024 को नया भारत उत्सव के तहत युवा संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जो मोदी सरकार के 10 साल पूरे होने पर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रायपुर के लोकसभा सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल रहे। विशेष अतिथि के रूप में डॉ. सच्चिदानंद शुक्ला, कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, डॉ. राजीव प्रकाश, निदेशक, आईआईटी भिलाई, डॉ. शैलेन्द्र शुक्ला, सेवानिवृत्त अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत बोर्ड (सीएसईबी) और दीपक म्हस्के, स्वतंत्र निदेशक, पेट्रोलियम मंत्रालय, भारत सरकार मौजूद रहे। कार्यक्रम की मेजबानी एनआईटी रायपुर के निदेशक, डॉ. एनवी रमना राव ने की। डॉ. अनुज शुक्ला, दानसिंह देवांगन, पल्लवी पांडेय और संजय जोशी आयोजन समिति के सदस्य रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत एनआईटी रायपुर के निदेशक डॉ. एन वी रमना राव के भाषण से हुई। उन्होंने संस्थान की भूमिका को एक तकनीकी नवाचार और खोज केंद्र के रूप में उजागर किया। प्रधानमंत्री मोदी के नए और बेहतर भारत के सपने को बताते हुए, उन्होंने कहा कि मजबूत शैक्षिक संस्थानों के जरिए भारत को और ताकतवर बनाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि कैसे सरकार की नीतियों में नए विचारों को अहमियत देने से भारत ने गांवों से लेकर शहरों तक में बड़ी तरक्की की है।

आईआईटी भिलाई के निदेशक डॉ. राजीव प्रकाश ने विकसित भारत ञ2047 के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता पर बात की और छात्रों के प्रयासों की देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि कैसे आईआईटी भिलाई ने फिनटेक, एग्रीटेक और मेडटेक क्षेत्रों में निवेश किया और कॉलेज में स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा भी दिया।

पेट्रोलियम मंत्रालय के दीपक म्हस्के ने पिछले दस साल में भारत की प्रगति, विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान इसकी मजबूती पर विचार साझा किए। उन्होंने छात्रों को देश की प्रगति में योगदान देने के लिए उत्साहित किया।

सीएसईबी के सेवानिवृत्त अध्यक्ष डॉ. शैलेन्द्र शुक्ला ने ऊर्जा क्षेत्र में हुए सुधारों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि पिछले दस साल में बिजली उत्पादन चार गुना बढ़ गया है और वन नेशन, वन ग्रिड नीति ने बिजली कटौती को कम करने और शहरी विकास को तेज करने में मदद की है।

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सच्चिदानंद शुक्ला ने विशेष रूप से नोटबंदी के बाद भारत के आर्थिक और बुनियादी ढांचे के विकास पर अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने प्राचीन संस्कृति को पुनर्जीवित करने के सरकार के प्रयासों की सराहना की, जिसे देश के विकास के लिए आवश्यक माना जाता है।

सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने उपस्थित छात्रों के साथ एक संवाद सत्र में हिस्सा लिया। एनआईटी के छात्र राहुल ने पूछा कि भारत कब विश्व गुरु बनेगा। इस पर सांसद महोदय ने प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीतियों की तारीफ की, जो दूसरे देशों के साथ आपसी सम्मान और सहयोग पर आधारित हैं। उन्होंने बताया कि कैसे चीन से उद्योग भारत आ रहे हैं और भारत की प्रतिभाशाली जनसंख्या इस विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

एनआईटी की पीएचडी छात्रा कुमारी दुर्गा पटेल ने श्री बृजमोहन अग्रवाल से उनके कॉलेज जीवन और उनके राजनीतिक करियर में प्रेरणा के बारे में पूछा। उन्होंने छात्र राजनीति में अपने शुरुआती संघर्षों और एक युवा नेता के रूप में अपने अनुभवों को साझा किया। श्री अग्रवाल ने उभरते नेताओं को सलाह दी कि वे मतदाताओं के साथ मजबूत संबंध बनाएं और जीवन में दयालु और परिश्रमी बने रहें।

इस कार्यक्रम में एक फोटो प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया जो मोदी सरकार के दस साल को प्रदर्शित कर रही थी और इस दौरान विभिन्न सरकारी और निजी संस्थानों के स्टॉल का प्रदर्शन भी किया गया। देश के विकास के लिए सरकारी नीतियों पे विचार करने के लिए सरकार द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को इस दौरान पुरस्कार और प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

क्रेडाई प्रॉपर्टी एक्सपो का आज भव्य शुभारंभ

23 से 25 अगस्त तक इंडोर स्टेडियम में है आयोजन, शाम 4:30 बजे उद्घाटन समारोह

40 डेवलपर्स अपने 200 प्रोजेक्ट के साथ रहेंगे मौजूद, मिलेगी सभी प्रकार की प्रॉपर्टी

रायपुर (विश्व परिवार)। आपके घर की बात अब तक यदि नहीं बनी है तो इस बार जरूर बन जायेगी, क्रेडाई छत्तीसगढ़ के 23 से 25 अगस्त तक आयोजित प्रापर्टी एक्सपो में आपके भरोसे पर सौ फीसदी खरा उतरने का प्रयास लेकर प्रापर्टी एक्सपो में 40 डेवलपर्स अपने 200 प्रोजेक्ट के साथ मौजूद रहेंगे जो हर बजट-हर लोकेशन का सभी प्रकार की अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ वैधानिक प्रॉपर्टी उपलब्ध करायेंगे। बेस्ट प्रॉपर्टी के लिए बेस्ट डील्स करने का यह सबसे अच्छा अवसर होगा।। तीन दिवसीय प्रापर्टी एक्सपो का भव्य शुभारंभ शुक्रवार शाम 4.30 बजे इंडोर स्टेडियम बूढ़ापारा में होगा। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ शासन के वित्त व आवास एवं पर्यावरण मंत्री श्री ओ.पी. चौधरी व विशिष्ट अतिथि दुर्ग सांसद विजय बघेल होंगे। क्रेडाई के सभी पदाधिकारी व सदस्य, स्टाल होल्डर्स, बिल्डर्स, सहयोगी प्रायोजक, बैंकिंग अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित रहेंगे। तीनों ही दिन स्पाट बुकिंग पर कई सारे आफर्स पाने का भी मौका मिलेगा। क्रेडाई छत्तीसगढ़ ने इस बार अपने प्रॉपर्टी एक्सपो का थीम रखा है - %घर की बात है%।

क्रेडाई छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष संजय रहेजा, प्रोग्राम चेयरमेन ऋषभ जैन, को-चेयरमेन नवनीत अग्रवाल व सचिव पंकज लाहोटी ने बताया कि साल दर साल क्रेडाई प्रॉपर्टी एक्सपो की भव्यता बढ़ते जा रही है, इसलिए कि साल भर के अंतराल में कई सारे नए प्रोजेक्ट जुड़ जाते हैं और आने वाले साल में वे भी एक्सपो में शामिल हो जाते हैं। इसका अनुभव प्रॉपर्टी बायर्स को भी मिलेगा जब क्रेडाई प्रॉपर्टी एक्सपो-2024 में वे पहुंचेंगे। सब कुछ होते हुए भी आवास का सपना पूरा नहीं हो पाता है, कोई न कोई दिक्कत आ जाती है। क्रेडाई मेंबर्स भी इस चीज को महसूस करते हैं इसलिए क्रेडाई प्रापर्टी एक्सपो जैसा आयोजन एक मंच पर आपको प्रदान किया जा रहा हैं ताकि हर विकल्प का चयन आपके पास होगा फ्लैट, प्लाट, मकान, विला या कमर्शियल आफिस ही क्यों न हो? सभी की खरीदी को आसान बनाने के लिए हर सहयोग व सुविधा यहां मिलेगी क्योकि ये आपके घर की बात है। 23 से 25 अगस्त के बीच अधिकाधिक लोगों के घर का सपना पूरा हो सके यही उद्देश्य इस प्रापर्टी एक्सपो के आयोजन का है। क्रेडाई के साथ हमेशा से जुड़े सहयोगी इस बार भी स्पांशरशिप कर रहे हैं जिनमें एसबीआई, आईसीआईसीआई, जगुआर, मैजिक पेंट्स, एशियन पेंट्स, पापुलर पेंट्स, आडी, एमकेजी व नेचर टच शामिल है। रेडियो पार्टनर हैं 94.3 माय एफएम, आउटडोर पार्टनर एसव्हीए, डिजिटल पार्टनर वाया मीडिया, गिफ्टिंग पार्टनर आईएफबी व फूड पार्टनर हैं द ओपन पेंट्री। क्रेडाई प्रॉपर्टी एक्सपो में रेरा का स्टॉल भी कस्टमर के लिए उपलब्ध रहेगा जिससे वे अपनी पसंद के प्रोजेक्ट की पूरी लीगल जानकारी भी हासिल कर सकेंगे। वैसे तो जो क्रेडाई के मेंबर्स हैं वे और उनके सारे प्रोजेक्ट पूरी तरह टाउन एंड कंट्री प्लानिंग से लेकर अन्य सभी वैधानिक एप्रुवल लेकर ही काम कर रहे हैं। फिर भी कोई संशय रहा तो रेरा के स्टाल में जाकर पड़ताल कर सकते हैं।

47वीं अखिल भारतीय रेलवे सुरक्षा बल योगा प्रतियोगिता-2024 का समापन

दक्षिण रेलवे ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा मध्य रेलवे ने दितीय स्थान प्राप्त किया

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर मंडल के मंडल मुख्यालय रायपुर मे 47 वी अखिल भारतीय रेलवे सुरक्षा बल योगा प्रतियोगिता -2024 का आयोजन दिनांक 20-08-2024 से 22.08.2024 तक डब्लुआरएस रेलवे कॉलोनी स्थित सामुदायिक भवन मे सम्पन्न हुई। इस प्रतियोगिता को उम्र के अनुसार 06 केटेगरीयों मे रखा गया है जो 18-21 वर्ष, 22-25 वर्ष, 26-30 वर्ष, 31-35 वर्ष, 36-45 वर्ष एवं 45 वर्ष से अधिक उम्र। यह प्रतियोगिता महिलाओं एवं पुरूष दोनो के लिए आयोजित की गई थी। इस प्रतियोगिता मे रेलवे सुरक्षा विशेष बल सहित क्षेत्रिय रेलो से 14 टीमे जिसमे महिला-15 और पुरूष-61 कुल-76 प्रतिभागियों ने भाग लेकर अपनी योग प्रतिभा को प्रदर्शित किया। इस प्रतियोगिता में दक्षिण रेलवे ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा मध्य रेलवे ने दितीय स्थान प्राप्त किया।

प्रतियोगिता के समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री संजीव कुमार, मंडल रेल प्रबंधक रायपुर, कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री रमण कुमार, वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त, रायपुर उपस्थित थे। इस अवसर मुख्य अतिथि द्वारा अपने उदबोधन में सभी लोगो को अपनी दिनचर्या में योग को शामिल करने की सलाह दी गई।

राज्य में लक्ष्य का 95 प्रतिशत बोनी पूर्ण

रायपुर (विश्व परिवार)। चालू खरीफ सीजन में अब तक लक्ष्य का 95 प्रतिशत बोनी पूर्ण हो चुका है। जबकि इस सीजन में राज्य सरकार द्वारा 48.63 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में विभिन्न फसलों के बोनी का लक्ष्य रखा गया है। अब तक 46.35 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में विभिन्न फसलों की बोनी हो चुकी है।

सुश्री नीनु इटियेरा, महाप्रबंधक, दपूम रेलवे की अध्यक्षता में जोनल स्तर पर प्रेम बैठक सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, मुख्यालय बिलासपुर में जोनल स्तर पर प्रेम (PREM Ñ Participation of Railway Employees in Management) बैठक संपन्न हुई। प्रेम मीटिंग का उद्देश्य रेलवे संगठन के यूनियन एवं एसोसिएशनों के प्रतिनिधियों एवं प्रबंधन के विचार विमर्शों के द्वारा संगठन की उत्पादकता एवं कार्यप्रणाली में गुणात्मक सुधार लाना होता है। इस बैठक की अध्यक्षता सुश्री नीनु इटियेरा, महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने की एवं इस बैठक में विभागाध्यक्षों के साथ-साथ मजदूर कांग्रेस अध्यक्ष, अनुसुचित जाति एवं जनजाति रेलवे कर्मचारी एसोसिएशन के सचिव, जोनल सहासचिव पिछड़ा वर्ग रेलवे कर्मचारी एसोसिएशन के अध्यक्ष, महासचिव, प्रमोटी आफिसर्स एसोसिएशन के वर्किंग अध्यक्ष एवं महासचिव, आफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष, महासचिव भी उपस्थित थे।

बैठक की शुरुआत में प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी ने रेल परिचालन में संरक्षा दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की सर्वोच्च प्राथमिकता है पर एक प्रेजेंटेशन के द्वारा आज की बैठक के बारे में विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर जोन की तीनों रेल मंडलो रायपुर, बिलासपुर एवं नागपुर में रेल परिचालन में संरक्षा के संबंधित सुधार के लिए कार्य योजना तैयार की गयी है। रेल परिचालन में संरक्षा को और अधिक सुचारु बनाने के लिए अनेक कदम उठाए गए है। रेल परिचालन में संरक्षा दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सजगता एवं बेहतर संरक्षा कार्य में सहभागिता निभाने वाले रेल संरक्षा के सजग प्रहरी कर्मचारियों का सम्मान महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के द्वारा हर माह आयोजित संरक्षा बैठक के दौरान किया जाता है। इसी प्रकार रेल कर्मचारियो को समय-समय पर प्रशिक्षण के दौरान उत्साह बढ़ाने के लिए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे अप्रैल से जुलाई, 2024 तक 35 संरक्षा सेमिनार का आयोजन किया गया है, इसी प्रकार रेलवे बोर्ड स्तर का 06 और ज़ोनल स्तर का 02 सफेटी ड्राइव चलाया गया है। इस ज़ोनल रेलवे ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में रेल दुर्घटनाओं को बचाने वाले रेल कर्मचारियो को 07 महाप्रबंधक स्तर के एवं 22 मंडल रेल प्रबंधक स्तर सहित जुलाई, 2024 तक कुल 29 रेल कर्मचारियो को सम्मान किया गया है, जिससे रेल कर्मचारियो उत्साह बना रहे। प्रेम मीटिंग के सदस्य संगठन एसईसीआरएमसी, एआईएससीटीआरईए, एआईओबीसीआरईए, एफ़आरओए, एसईसीआरपीओए के पदाधिकारियों के द्वारा संरक्षा से संबन्धित विभिन्न मुद्दो पर महत्वपूर्ण सुझाओ दिये गए। संरक्षा सफेटी का आयोजन में मानकों के अनुसार मानव संसाधन प्रदान करना, संरक्षा उपकरणो का उचित प्रावधान, संरक्षा से जूड़े कर्मचारियों का प्रशिक्षण, कर्मचारी कल्याण के उचित प्रावधान, आदि मुद्दों पर सुझाव प्राप्त हुए।

इस बैठक में सभी ने अपने-अपने बहुमूल्य तथा उपयोगी सुझाव दिये। बैठक को संबोधित करते हुए महाप्रबन्धक सुश्री नीनु इटियेरा ने सबके परस्परिक सहयोग से यात्रियो को दी जाने वाली सेवाओ की गुणवत्ता बढ़ाने पर बल देने की बात कही। उन्होने कहा कि छोटे-छोटे सुधार ही बड़े सुधार में परिवर्तित हो जाते है। बैठक के प्रारम्भ में प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी डॉ. दर्शनिता बी. अहलुवालिया ने सुश्री नीनु इटियेरा, महाप्रबंधक सहित सभी अधिकारियों एवं यूनियनों के पदाधिकारियों का स्वागत किया तथा इस बैठक के अंत में उपमहाप्रबंधक, समीर कांत माथुर ने इस बैठक में उपस्थित रेल अधिकारियों व यूनियनों के पदाधिकारियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

यादव समाज ने देवेंद्र यादव की गिरफ्तारी पर ली प्रेसवार्ता, सरकार से की निष्पक्ष जांच की मांग

रायपुर (विश्व परिवार)। भिलाई विधायक देवेंद्र यादव की गिरफ्तारी का जिला यादव समाज ने कड़ी निंदा की है। बता दे की शुक्रवार को प्रेस क्लब में यादव समाज के पदाधिकारियों पत्रकार वार्ता को संबोधित किया। प्रेस कांफ्रेंस कर यादव ने कहा कि%% बलौदाबाजार केस की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए. देवेंद्र यादव की गिरफ्तारी की हम कड़ी निंदा करते हैं। यादव समाज के प्रदेश अध्यक्ष जगनीक यादव ने कहा कि विधायक देवेंद्र यादव की गिरफ्तारी की कड़ी निंदा करते हैं। हम बौलदाबाजार में तोड़फोड़ और आगजनी की घटना का विरोध करते हैं। दोषियों पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए. निर्दोष लोगों को गिरफ्तार करना भी गलत है। समाज के पदाधिकारियों ने कहा की बलौदाबाजार पुलिस ने बिना किसी ठोक सबूत के देवेंद्र यादव को गिरफ्तार किया है। हमारी मांग है कि देवेंद्र यादव की गिरफ्तारी की जांच हो. जो भी लोग इस घटना के दोषी हैं उनको भी कड़ी से कड़ी सजा मिले इसकी मांग करते हैं।

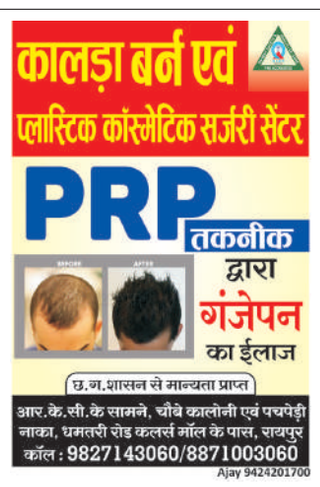

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354